Printed and Published by Indian Churches of Christ - 2012
(Only for In-House circulation)

नए मसीहियों के लिये फॉलो अप अध्ययन

इंडियन चर्च ऑफ क्राइस्ट

नए मसीहीयों के लिये फॉलो अप अध्ययन

परिचय: पुराना हमेशा के लिये चला गया है और एक नए **आप** ने उसका स्थान ले लिया है। अब आप एक मसीही हो और मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि उसने आपको बचाया और अपना बना लिया. जिस किसी भी अनुभव के कारण आप इस अवस्था/मंच तक पहूँचे हो, यह आपके जीवन का एक बढ़िया और महत्वपूर्ण रुपान्तरण है। हमारी यह प्रार्थना है कि आनेवाले सप्ताहों में आपको जो कुछ भी सिखाया जाएगा वह उस अनंन्त रूपान्तरण के पथ पर निरन्तर आपकी मदद करेगा।

अनुक्रमणिका

अध्ययन १ : प्रार्थना – परमेश्वर से बातें करना

अध्ययन २ : पवित्र शास्त्र अध्ययन – परमेश्वर की सुनना

अध्ययन ३ : विश्वास, कार्य और अनुग्रह – संन्तुलन

अध्ययन ४ : शरीर (मसीह के) में सम्बन्ध

अध्ययन ५ : नए नीयम की कलीसिया – तीन पहलू

अध्ययन ६ : मार्गदर्शन पाना – परमेश्वर की योजना

अध्ययन ७ : हृदय

अध्ययन ८ : अनुशासित धार्मिक जीवन

अध्ययन ९ : प्रचार, निडरता और युक्ति

अध्ययन १०: सेवा की आत्मा

अध्ययन ११: अविवाहित मसीही जीवन

अध्ययन १२: विवाहित मसीही जीवन

अध्ययन १३: मसीही माता – पिता द्वारा बच्चों का मार्गदर्शन

अध्ययन १४: यीशू – एक दृढ़विश्वासी व्यक्ति

अध्ययन १५: पवित्र आत्मा को समझना–१ – शांत समय

अध्ययन १६: पवित्र आत्मा को समझना–२ – मसीही जीवन

अध्ययन १७: पवित्र आत्मा को समझना–३ – प्रेम सदा बना रहता है

अध्ययन १८: गलत शिक्षा/सिध्दांन्त का खंडन करना – मरियम

अध्ययन १९: स्वर्ग और नरक

लेकिन अब्राहम अपनी बात पर डंटा था। उसने कहा यदि पवित्र शास्त्र उनके लिये काफी नहीं तो, एक पुनरुत्थान भी उनको संकल्प नहीं दे सकता (व.३१)।

स्वर्ग और नरक का यीशु का चित्र बिलकुल स्पष्ट और संकल्प देनेवाला है। स्वर्ग एक संगती, शान्ती और आराम की जगह है, जहाँ हर आवश्यक्ताएँ पूरी होती हैं। नरक एक अकेलेपन, कलह और आवश्यक्ताओं की जगह है जो पच्छतावे और दु:खों से भरा है। निश्चित ही हमें इस बात के लिये भरसक प्रयत्न करना है कि अधिक से अधिक लोग हमारे साथ स्वर्ग में हो सकें।

जिनका नाम जीवन की पुस्तक में नहीं लिखा है उनका अन्त आग की झील में हुआ (व.१५)।

प्रकाशितवाक्य २१:१–५ यूहन्ना ने नए यरुशलेम को स्वर्ग से उतरते देखा (व.२)। स्वर्ग परमेश्वर के साथ संगती करने की जग़ह है (व.३)। हर एक के आंसू पोंच्छे जाते हैं (व.४)। इसके बाद न मृत्यु रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पिड़ा रहेगी (व.४)। यह एक ऐसी जग़ह है जहाँ हम और वह सभी जिनसे हम प्रेम करते हैं जाने के लिये बेचैन रहते हैं। यह इसके योग्य है।

प्रकाशितवाक्य २१:६–८ यीशु प्यासों को जीवन का जल पिलाते हैं (व.६)। लेकिन यदि हम पाप में रहेंगे तो दण्डित किए जाएंगे (व.८)। परमेश्वर कायरता, अविश्वासिपन, व्यभिचार, मूर्तिपूजा, झूठ और ऐसे दूसरे पापों का बड़ी कठोरता से न्याय करते हैं।

यीशु ने स्वर्ग और नरक का एक चित्र बनाया

लूका १६:१९–३१ वचन १९–२१ में हम देखते हैं कि धनी व्यक्ति हर दिन सुख–विलास में बिता रहा था (व.१९)। उसके फाटक पर एक गरीब व्यक्ति था, लाजर (व.२०)। वह व्यक्ति इतना ग़रीब था और उसका स्वास्थ्य इतना बुरा था कि कुत्ते उसके घावों को चाट रहे थे (व.२१)। लेकिन उन दोनों की मृत्यु का समय आ गया, जैसा हमारा भी आनेवाला है (व.२२)। स्वर्गदूतों ने उस भिकारी को अब्राहम के पास पहूँचाया। धनी व्यक्ति गाड़ा गया। वह एक प्रभावी शव यात्रा रही होगी। लोगों ने उसके बारे में अच्छि–अच्छि बातें कहीं होंगी। लेकिन उसका अन्त नरक में हुआ (व.२३), जहाँ वह पीड़ा में पड़ा था। नरक से वह धनी व्यक्ति स्वर्ग को देख सकता था। उसने क्या खोया इसे वह देख सकता था (व.२३)। उसने चिलाकर अब्राहम से मदद मांगी (व.२४)। अब उसे धार्मिक बातों का महत्व समझ आ रहा था। अपनी पीड़ा को कम करने के लिये उसने पानी मांगा (व.२४)। लेकिन अब्राहम ने उससे कहा, धर्मियों के लिये स्वर्ग एक आरामदेय जगह है (व.२६), लेकिन नरक स्वार्थियों के लिये एक न्याय की जगह है (व.२५)। और हमारी मृत्यु के बाद हम यहाँ से वहाँ या वहाँ से यहाँ आ – जा नहीं सकते (व.२६)। उस तरफ या इस तरफ जाने का समय अब ही है!

वचन २७ में हम देखते हैं कि धनी व्यक्ति अब्राहम से विनती करता है कि लाजर को एक धर्मप्रचारक की नाइ उसके भाईयों के घर भेजे। वह चाहता था कि उसके भाईयों को सावधान करे (व.२८)। अब्राहम बताता है कि उन्हें पश्चाताप के लिये पवित्र शास्त्र ही काफी है (व.२९)। धनी व्यक्ति ज़ोर डाल रहा था कि उन्हें चमत्कार की आवश्यक्ता है

अध्ययन १

प्रार्थना – परमेश्वर से बातें करना

प्रार्थना और उपवास की प्राथमिकता

याकूब ४:८ परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा। परमेश्वर चाहता है कि हम उसके निकट आएं! प्रार्थना याने परमेश्वर से बातें करना, और उनसे कहना कि आप उनसे प्रेम करते हैं। आपके पास यह एक मौका है कि आप परमेश्वर से हर छोटी बड़ी चीजों के बारे में बातें करें और यह विश्वास करें कि वह सुन रहा है। जैसे हम दूसरों के साथ करते हैं वैसे ही प्रार्थना परमेश्वर से रिश्ता बढ़ाने की एक प्रक्रिया है।

मरकुस १:३५ यीशु, एक व्यस्त व्यक्ति, फिर भी प्रार्थना के लिये समय निकालते हैं। वे प्रार्थना के लिये एकांत जगह और समय ढूंढ निकालते हैं।

मत्ती ६:५–८ एकांत जगह ढूंढो। लोगों को प्रभावित करने के लिये प्रार्थना ना करो। विशिष्ट या स्पष्ट रहो – हमारे मांगने से पहले ही परमेश्वर जानता है कि हमें क्या चाहिये, लेकिन फिर भी हमें मांगना चाहिये! बिना हिचकिचाए एक मित्र के समान परमेश्वर से बातें करें।

मत्ती ६:१६–१७ यीशु यह अपेक्षा करते हैं कि उपवास, भी प्रार्थना की तरह ही हो। **नेह. १:४, यशा. ५८** और **योएल २:१२** भी देखें!

याकूब ५:१३–१८ यदि आप दु:खी हो, तो प्रार्थना करें (व.१३)। यदि आप आनन्दित हो, तो परमेश्वर की स्तूती करें (व.१३)। यदि आप बीमार हैं, तो धार्मिक लोगों को आपके लिये प्रार्थना करने के लिये बुलाएं (व.१४–१५)। यदि आप पाप में हो, तो पापों का स्वीकार कर प्रार्थना करो (व.१६)।

एलीयाह एक साधारण व्यक्ति था – लेकिन उसने असाधारण काम किये, क्योंकि उसने प्रार्थना किया (व.१६)।

भावपूर्ण प्रार्थना

भ.संहिता ४२:१–२ लेखक परमेश्वर के लिये प्यासा है।

भ.संहिता ६३:१–२ लेखक दृढ़ संकल्प के साथ परमेश्वर को खोजता है।

लूका ६:१२ यीशु ने सारी रात प्रार्थना की !

इब्रानियों ५:७ यीशु ने "ऊंचे शब्द से पुकार–पुकारकर और आंसू बहा–बहाकर" प्रार्थना की।

सीखने की प्रक्रिया

लूका ११:१–१३ प्रार्थना स्वभाविक नहीं है। शिष्यों को भी सीखाना पड़ा। यीशु ने इस प्रार्थना में एक ढांचे का उपयोग किया है –
अनुकरण करने के लिये यह एक उपयोगी उपाय है:

स्तूती – वचन २ में हम उसे परमेश्वर की स्तूती करते देखते हैं।

कबूली – वचन ४ में वह क्षमा मांगता है।

धन्यवाद – इस प्रार्थना में यह दिखाई नहीं देता; लेकिन दानिय्येल ने दिन में तीन बार धन्यवाद दिया – दानिय्येल ६:१०

भ.संहिता १०५:१ हमें कहता है "प्रभू का धन्यवाद करो"

बिनती – बिनती अर्थात मांगना। लूका ११:२ में यीशु परमेश्वर से मांगता है कि उसका राज्य आए; वचन ३ में वह परमेश्वर से अपनी रोज़ की रोटी मांगता है।

कुलु ४:२–४ हमें प्रार्थना में लगे रहना और धन्यवाद के साथ उसमें जागृत रहना है। पौलुस चाहता था कि वे खुले द्वार के लिये प्रार्थना करें ताकि वह प्रभावी प्रचार कर सके। यदि आप दूसरों की ज़रुरतों पर ध्यान लगाए रखें तो आप प्रभावशाली प्रार्थना करना सीख जाएंगे।

हमारी प्रार्थनाओं की समस्या

१पतरस ४:७ ध्यान की कमी हमारी प्रार्थनाओं को घात पहूँचा सकती है। आप ऊंचे स्वर में प्रार्थना करने की इच्छा कर सकते हैं।

भ.संहिता ६६:१८ व्यक्तिगत धार्मिकता की कमी प्रार्थना को प्रभावहीन बना सकती है। परमेश्वर धर्मी मनुष्यों की प्रार्थना सुनते हैं (यूहन्ना ९:३१)।

परमेश्वर हमारी सुनने के लिये उत्सुक रहते हैं (मत्ती ७:११)।

लूका १८:१–८ दृढ़ लगन की कमी – विधवा स्त्री निरंतर प्रयत्न करती रही और इसीलिये अन्यायी न्यायाधीश को अन्ततः सुनना पड़ा।

१यूहन्ना ५:१४ परमेश्वर की इच्छा के अनुसार की गई प्रार्थना का उत्तर मिलता है।

यूहन्ना १४:१३–१४ कहता है यीशू के नाम में प्रार्थना करो।

मरकुस ११:२४ विश्वास की कमी प्रार्थना में रुकावट बन सकती है।

याकूब १:६–८ कहता है हमें विश्वास से और बिना संदेह के मांगना चाहिये।

न्याय तुरन्त है

लूका २३:३९–४३ दानों अपराधी भी यीशु की निन्दा कर रहे थे (मत्ती २७:४४)। लेकिन एक का हृदय बदला और वह परमेश्वर के भय और अपनी सजा सही होने की बात करने लगा (व.४०–४१)। उसने यीशु को अपने राज्य में उसे याद रखने को कहा। वचन ४३ में अचंम्भित करनेवाला उत्तर था, "आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।" उसकी मृत्यु के प श्चा त तुरन्त उसका न्याय होना था। इस वाक्य को लेकर कई विद्वानों ने धर्मशास्त्र से संम्बन्धित मृत्यु और उसके बाद के अन्तिम स्थान की परिभाषा को स्पष्ट करने में अपनी कलमें घिस डालीं। यदि हम अब तक न्याय के दिन तक नहीं पहूँचे हैं तो यीशु कैसे स्वर्ग की बात कर सकते हैं? यूनानी भाषा में यीशु ने स्वर्ग के लिये जिस शब्द का उपयोग किया वह है पॅराडिओ। यही शब्द प्रकाशितवाक्य २:७ में भी आता है, जो यह सच्चाई बताता है कि जो विजय प्राप्त करेगा, उसे यीशु जीवन के पेड़ का फल खाने देंगे जो परमेश्वर के स्वर्गलोक (पॅराडिओ)में है, स्वर्ग का उल्लेख। परंन्तु विद्वानों ने उनके शब्दों की पदव्याख्या (वाक्य के कुछ शब्दों को लेकर उनका संम्बन्ध दूसरे शब्दों से जोड़ना) की, और कई सम्भावनाओं को उभारा। (उदाहरण के लिये: कुछ ने यह प्रस्ताव रखा कि धार्मिक और अधार्मिक लोगों के लिये एक अस्थायी जग़ह है जिसे "स्वर्ग" और "नरक" कहते हैं जहाँ उन्हे अस्थायी रुप से न्याय के दिन तक रखा जाता है और न्याय के दिन उन्हें उनके स्थायी जग़हों पर भेज दिया जाता है)। मैं यह विश्वास नहीं करता कि क्रूस पर यीशु धर्मशास्त्र के वाक्य बोल रहे थे, लेकिन यह शब्द स्वर्गीय दर्शन और प्रेम के थे। परमेश्वर समय से परे हैं, और जब हम मर जाते हैं हमारा समय समाप्त हो जाता है। हमें भविष्य में भेज दिया जाता है, न्याय के दिन के लिये। यह उसी दिन होता है जिस दिन हमारी मृत्यु होती है। तो यदि हम स्वर्ग या नरक जाते हैं तो वह है "आज" जब हम मृत्यु पाते हैं। स्पष्ट रुप से यह महत्वपूर्ण है कि हमारी मृत्यु से पहले यीशु हमसे यह कह सकते हैं, "आज तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।" स्वर्गलोक एक सुन्दर जग़ह है – शान्ति और संगती की।

हमारे जीवन का सबसे बड़ा चुनाव

प्रकाशितवाक्य २०:११–१५ स्वर्ग में परमेश्वर अपने सिंहासन पर विराजमान हैं (व.११)।सभी मृत और हम उनके सामने खड़े होंगे(व.१२)। पुस्तकें खोली गईं – हमारे जीवन की सारी बातें उसमें लिखी हैं। हम सभी दोषी पाए गए (व.१२–१३)। फिर भी जीवन की पुस्तक हमें छुटकारा देती है। यह वही स्थान है जहाँ हम अपना नाम लिखाना चाहते हैं (व.१४–१५)। जिनका नाम जीवन की पुस्तक में नहीं लिखा है उनका अन्त आग की झील में हुआ (व.१५)।

के पास नहीं आए इससे यह सुचित होता है कि यीशु के जन्म के बाद एक आम पती पत्नी की तरह उनका भी एक योग्य वैवाहिक सम्बन्ध था। तो यह कहना गलत होगा कि मरियम सर्वदा पवित्र थी। यदि वह "सर्वदा पवित्र" थीं तो वह यूसुफ के लिये एक अच्छी पत्नी नहीं बन सकती थी, जैसा पवित्र शास्त्र हर पत्नी को अच्छी पत्नी बनने की आज्ञा देता है।

और बच्चे: मरकुस ६:३ यहाँ हम देखते हैं कि यीशु के अलावा मरियम के और भी बच्चे थे। वे सभी यीशु के बाद जन्मे थे।

मरियम को लगभग यीशु के समानता में बढ़ाने के कॅथोलिक कलीसिया के शिक्षण के एकदम विपरीत पवित्र शास्त्र यह सिखाता है कि एक यीशु ही नई वाचा के (अकेले) मध्यस्थ हैं (इब्रा. १२:२४) ; वह उद्धार का द्वार है (यूहन्ना १०:९); और परमेश्वर की सारी कृपा और अनुग्रह हमें "यीशु मसीह के द्वारा" दी गई है (इफि.२:७); मरियम के द्वारा कोई उद्धार नहीं पाएगा; जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा (रोमियों १०:१३)।

अध्ययन १९

स्वर्ग और नरक

स्वर्ग और नरक में यीशु विश्वास रखते थे, और मसीही होने के नाते हम भी इसमें विश्वास रखते हैं। यह एक साधारण चुनाव है – हमें अपने आप से पूछना चाहिये: मृत्यु के बाद क्या होता है इसके बारे में बेहतर कौन जानता है? मैं या यीशु जो मरे हुओं में से जी उठे? चुनाव स्पष्ट है।

जो भी कीमत चुकानी पड़े

मरकुस ९:४२–४८ यहाँ पर यीशु बताते हैं कि, नरक की आग कभी नहीं बुझती (व.४३), जो कीड़े मृत शरीर खाने का मज़ा लूटते, कभी नहीं मरते (व.४७)। हम किसी को नरक में न भेजें इस बात में यीशु बहुत कड़क हैं (व.४२)। वे कहते हैं आपका पूरा शरीर नरक जाए इससे अच्छा है अपने हाथ, या पैर, या आँख के बिना आप स्वर्ग जाएँ। कोई भी बात जो हमें हमारे जीवन में परमेश्वर से दूर रखती है हमें उसे काटने के लिये तैयार रहना चाहिये। यह हो सकता है एक रिश्ता। एक काम। एक बुरी आदत। एक मनपसंद बात। ज़रुरी नहीं कि इन बातों में बुराईयाँ हों या ये बातें ग़लत ही हों। लेकिन यदि यह बातें हमें परमेश्वर से दूर रखती हैं तो इनसे निपटने में हमें तत्परता दिखानी चाहिये। नरक में जाने से बचने के लिये हमें काई भी कीमत चुकाने के लिये तैयार रहना चाहिये।

उपयोग

इफि.६:१८ हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना और बिनती करते रहो!

फिलि ४:६–७ हरएक बात में .....परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं। दु:खों और स्वपनों के प्रार्थना की एक सूची बनाओ।

१पतरस ५:७ वह तुम्हारी और मेरी चिंता करता है। जब भी आप प्रार्थना करें तो निश्चित करें कि अपने सारे दु:ख और बोझ परमेश्वर को सौंप दें।

यिर्मयाह ३०:२१ परमेश्वर उन लोगों की खोज़ कर रहे हैं जो स्वयं को उनके करीब रखने में लवलीन होंगे। क्या आप तैयार हैं?

भ.संहिता ५:३ हर दिन एक प्रार्थना समय रखें – प्रार्थना समय की योजना बनाएं, कितनी देर आप प्रार्थना करेंगे, कहाँ प्रार्थना करेंगे।

१थिस्स.५:१७ सारे दिन और सारे सप्ताह, निरंतर प्रार्थना में लगे रहो। यह यूं भी हो सकता है कि किसी से बात करने से पहले आप जल्दि से मन में प्रार्थना करें जैसे नहेम्याह २:४ में नहेम्याह ने राजा से बात करते समय किया था।

अध्ययन २

पवित्र शास्त्र अध्ययन – परमेश्वर की सुनना

वे जो नए मसिहीयों का मसीह में मार्गदर्शन कर रहे हैं उनका सर्वप्रथम कर्तव्य यह है कि वे उन्हें लगातार और फलदायक पवित्र शास्त्र अध्ययन में लगे रहने में मदद करते रहें। सिर्फ यही एक मार्ग है शैतान और उसकी योजनाओं के साम्हने "आत्मा की तलवार" (इफि.६:१८) लेकर डंटे रहने का। आत्मा की स्वतंत्रता को बढ़ावा देते हुए, आओ हम ध्यान से हर मसीही स्त्री पुरुष को बिरीयों सा मन रखने को कहें(प्रेरितों १७:१०–१२) जो स्वयं पवित्र शास्त्र के शिक्षणों को समझने का प्रयत्न करते ताकि अपने संकल्पों में मज़बूत बन सकें।

प्रस्तावना

मत्ती ४:४ " हर एक वचन"। रोटी के तुल्य है, और उतना ही आवश्यक भी। यदि आप परमेश्वर के वचन में बने न रहोगे, तो आप विश्वास में भी बने नही रह सकते।

मत्ती २४:३५ कहता है कि यीशू की बातें कभी नहीं टलेंगी।

यहोशू १:८ व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित से कभी न उतरने पाए। इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना! **भ.संहिता १:२–३** भी देखें।

एज्रा ७:१० एज्रा ने परमेश्वर की व्यवस्था को समझने और उन पर चलने में अपना मन लगाया था। आओ हम भी उसकी तरह बनें!

यशायाह ६६:२ परमेश्वर उसी व्यक्ति का मान रखते हैं जो उनके वचनों से थरथराता है।

अपने पवित्र शास्त्र अध्ययन पर कार्य करें

> **२पतरस ३:१५–१६** यह संभव है कि वचनों को खींच–तानकर हम अपने ही विनाश का कारण बना सकते हैं (व.१६)। कुछ अनुछेद समझने में कठीन हैं (व.१६), परन्तु असंभव नही है (२कुरी.१:१३)। पहले आप खुद उसे समझने का प्रयत्न करें। लेकिन यदि समझ न आए तो परमेश्वर और दूसरे शिष्यों की मदद लो।

२तिमु.२:१५ एक सिध्द कार्यकर्ता बनो (२तिमु. ३:१७) जो कभी लज्जित न हो। लोगों के साथ अध्ययन करना सीखो।

१पतरस ३:१५ प्रचार के लिये सुसज्जित रहो। इसके लिये पवित्र शास्त्र के ज्ञान के अलावा भी और अधिक ज्ञान की ज़रुरत है वह है लोगों के प्रश्नों का आदर और नम्रता से उत्तर देना।

> **भ.संहिता ११९:९–११** वचनों के अनुसार आचरण कर हम पवित्र रह सकते हैं। परमेश्वर के वचनों को अपने मन में छुपाकर हम पापों से अपनी रक्षा कर सकते हैं। यदि आप पूरा भ.संहिता ११९ पढ़ें तो इसके लेखक का परमेश्वर के प्रति प्रेम को आप जान सकते हैं।

याकूब १:२२–२५ पवित्र शास्त्र पढ़कर व्यावहारिक जीवन में उसका उपयोग न करने का अर्थ है, कि हमारा पवित्र शास्त्र पढ़ना व्यर्थ है।

प्रेरणादायी रहो

रोमियों १५:४ वचनों से प्रोत्साहन, हमें आशा देता है!

१कुरी. १०:११ पुराने नियम की कहानियां इसलिये घटीं कि हमारे शिक्षण में उदाहरण बनें।

कुलु. ३:१६ एक दूसरे से परमेश्वर के वचनों के द्वारा बातें करो। एक दूसरे को सिखाने और अपने घर में उसका उपयोग करो।

२तिमु.२:७ परमेश्वर की बातों पर ध्यान दो और परमेश्वर तुम्हे समझ देगा।

पवित्र शास्त्र अध्ययन के अ ब क ड

- **प्रश्न पूच्छें :** वचन क्या कहता है? क्या लिखा गया है? कौन बोल रहा है? किस के बारे में है? कौनसे मुख्य चरित्र हैं? वह किस से बातें कर रहा है?
- कब यह घटना घटी/घटेगी? कब किसी व्यक्ति, जन या राष्ट्र के साथ कुछ घटा/घटेगा?
- कब और कहाँ यह घटा/घटेगा? यह कहाँ कहा गया था?
- क्यों कुछ कहा जा रहा है? यह क्यों हुआ/होगा? इस समय क्यों? इस व्यक्ति के साथ क्यों?
- यह कैसे हुआ/होगा? यह कैसे किया जाना चाहिये? यह कैसे दर्शाया गया है?

शिष्य होने के नाते, मरियम के जीवन से हम प्रेरणा पाते हैं – परमेश्वर के प्रति उनकी आज्ञाकारिता, उनकी वचनबद्धता, उनकी भक्ति और विश्वास। हम उन्हें एक ऐसी स्त्री के रुप में देखते हैं जिसका अनुकरण हम सभी को करना चाहिये, क्योंकि उन्होंने एक धार्मिक स्त्री का जीवन बिताया, एक अच्छी माता और युसुफ के लिये एक अच्छी पत्नी। हमें उन्हें एक मध्यस्थ नहीं मानना चाहिये क्योंकि पवित्र शास्त्र स्पष्ट रुप से यह कहता है कि सिर्फ एक ही मध्यस्थ है और वह है यीशु।

> परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच भी एक ही मध्यस्थ है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है। उसने अपने आपको सब के छुटकारे के मूल्य में दे दिया। (१तीमुथियुस २:५–६)

पवित्र शास्त्र में इलीशिबा, मरियम को, "तू स्त्री जाति में धन्य है " कहती है (लूका १:४२)। स्वर्गदूत मरियम को दर्शन देकर कहता है, "तुझ पर परमेश्वर का अनुग्रह हुआ है! प्रभु तेरे साथ है" (लूका १:२८)। मरियम खुद कहती है, " अब से युग –युग के लोग मुझे धन्य कहेंगे" (लूका १:४८)। पवित्र शास्त्र में यह सब यह सूचित करने के लिये लिखा गया है कि मरियम एक धन्य स्त्री थी जिस पर परमेश्वर का अनुग्रह हुआ ताकि वह यीशु को जन्म दे सके, लेकिन यह सारे वचन और पवित्र शास्त्र में और कहीं भी कोई भी वचन यह नहीं कहता कि मरियम को "विशेष भक्ति" दिखाएं या उन्हें एक मध्यस्थ समझें या कलीसिया की माता समझें।

हमारे मनन करने हेतु यह कुछ स्पष्ट वचन हैं –

> **एक मध्यस्थ: १तीमु.२:३–५** वचन ४ के अनुसार, परमेश्वर चाहते हैं कि प्रत्येक मनुष्य उद्धार पाएं। मनुष्यों और परमेश्वर के बीच कितने मध्यस्थ हैं? सिर्फ एक ही मध्यस्थ, यीशु मसीह, एक मनुष्य। कुछ कॅथोलिक यह कहते हैं कि मनुष्य और यीशु के बीच मरियम मध्यस्थ है, क्योंकि यूहन्ना २ में वह यीशु से मदद करने को कहती हैं। लेकिन पवित्र शास्त्र सिखाता है कि केवल एक ही मध्यस्थ है– यीशु।
>
> **सिर्फ एक पापी: मरकुस ३:२०–२१, ३:३१–३५** समय के इस मोड़ पर मरियम को यीशु के जीवन जीने का तरीका कुछ ठीक नहीं लग रहा था। वह इस सच्चाई से परेशान थी कि उसने कुछ नहीं खाया। तो वह और उसके दुसरे बेटे यीशु को लेने गए (मरकुस ३:३१–३५)। मरियम मेरी और आपकी तरह एक साधारण स्त्री थी। कभी कभार उसने पाप भी किया। कभी कभार उसने गलत चुनाव भी किया। लेकिन फिर भी वह एक अद्भुत स्त्री थी।
>
> **यथार्थ वैवाहिक सम्बन्ध: मत्ती १:२५** "परन्तु जब तक मरियम ने पुत्र को जन्म न दिया तब तक वह (यूसुफ) उसके पास न गया। यूसुफ ने उसका नाम 'यीशु' रखा।"
>
> यह यहाँ कहता है कि यीशु के जन्म तक, यूसुफ और मरियम एक दूसरे

प्रति दोषी सिद्ध हों,(व.२४–२५) और पश्चाताप करें !
छ्रमेश्वर का मन लोगों को पाप के प्रति दोषी महसूस करते और पश्चाताप करते देखना चाहता है। अपने जीवन के बारे में सोचो। क्या दूसरों को आप पाप के प्रति दोषी सिद्ध कराते रहे हो? क्या आप उन्हें चुनौती देते और सच्चाई की शिक्षा देते रहे हो? आत्मा आपसे यही करने की अपेक्षा रखता है!

६. सबसे उत्तम मार्ग - १कुरि. १३:१–३। पौलुस यहाँ सबसे उत्तम मार्ग पर ज़ोर डालता है, प्रेम का मार्ग। प्रेम के बिना संसार के सभी चमत्कार व्यर्थ हैं। १कुरि. १३:८–१३ वचन ८ के अनुसार भविष्यवाणियां, भाषाएं और विशेष ज्ञान मिट जाएंगे। परन्तु विश्वास, आशा और प्रेम बनें रहेंगे (व.१३)। कलीसिया की नींव है, विश्वास, आशा और प्रेम। चमत्कार के वरदान मिट जाएंगे, लेकिन प्रेम सदा के लिये बना रहेगा। उनके पास एक महत्वपूर्ण उद्देश्य था: पहली कलीसिया की स्थापना करने में सहायता और यीशु के ईश्वरत्व को साबित करना। लेकिन आज परमेश्वर का वचन और हमारा प्रेम यह सब काम करने के लिये पर्याप्त है!

निष्कर्ष: आज हमने कई गहरे उपायों को देखा, जो शायद समझने के लिये कठिन होंगे। व्यवहारिक चुनौतियां अपनाओ और अपना जीवन बदलो। यह जान लो कि प्रेम ही सबकुछ है न कि आज के पिन्तेकुस्तियों के सिर्फ नाम मात्र किये जानेवाले "चमत्कार"। परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वे आपके जीवन में चमत्कार करें। एक चुनौतिपूर्ण रीति से प्रचार करें ताकि दूसरों को बदलने में मदद मिले! और आत्मा को आपको बदलने का अवसर दो कि आप जितना हो सके उतना यीशु की तरह बन पाएं।

अध्ययन १८

ग़लत सिद्धान्तों को झूठा प्रमाणित करना – मरियम

अनेक कॅथोलिक लोगों का मरियम के प्रति एक ग़लत दृष्टिकोण है, वे उन्हें , "परमेश्वर की माता" और "कलीसिया की माता" के रुप में मानते हैं। पवित्र शास्त्र में यह उपाधियां नहीं दी गईं हैं। वे उन्हें पापरहित मानते हैं। उनका ऐसा मानना है कि यीशु के सिवाय मरियम की कभी कोई और संन्तानें नहीं थीं, उन्हें वे "सर्वदा पवित्र" मानते हैं। वे उन्हें लगभग यीशु के समान्तर स्थान देते हैं!
मरियम के बारे में कॅथोलिक साहित्य से यहाँ कुछ अनुछेद के अंश हैं।
जैसे कि ऊपर आप यह देख सकते हैं कि कॅथोलिक क्षमाप्रार्थी मरियम के प्रति "विशेष भक्ति" दिखाना चाहिये इस बात को समझाने के लिये कई मार्ग ढूंढ लेते हैं, जबकि उन्हें "महानता से यीशु भक्ति का उत्साह बढ़ाना" चाहिये। निस्संदेह पवित्र शास्त्र में इन सभी बातों को न कभी प्रोत्साहन दिया गया है और न ही आज्ञा दी गई है।

दोषीसिध्द पाओ: यह मुझ पर कैसे लागू होता है? दोषी सिध्द बातों को लिखो और उनके लिये प्रार्थना करो।
इसी प्रकार के दूसरे अनुछेदों से तुलना करो: कई बार सुसमाचार में एक जैसे अनुछेद पाए जाते हैं। पुराने नियम के इतिहास की किताबें (१शमुएल से एस्तर) में बार बार भविष्यद्वक्ताओं का उल्लेख (यशायाह – मलाकी) या भ.संहिता या दूसरे लेख (नी.वचन – श्रेष्ठगीत) एक दूसरे से जुड़े हैं। रोमियों की किताब में कुछ विशेष शहरों का उल्लेख है जो नए नियम के दूसरे पत्रों में भी पाए जाते हैं।
कल्पना करो कि कैसा रहा होगा: जो अनुछेद आप पढ़ रहे हैं उसके लिये प्रार्थना करें। कल्पना करें कि वहां रहना कैसा होगा।
हरदिन का अध्ययन: हर दिन पवित्र शास्त्र अध्ययन करने का समय निश्चित करें। पहले नए नियम को पढ़ें। थोड़ा यहां थोड़ा वहां पढ़ने के बजाए पूरी किताब पढ़ें। एक वर्ष में पूरा पवित्र शास्त्र पढ़ने की योजना बनाएं।

अध्ययन ३

विश्वास, कर्म और अनुग्रह – एक संतुलन

आज की कलीसिया में अति उपहास की बात यह है कि, नए मसीहियों को स्वयं पर निर्भर होने की और कार्यों द्वारा उद्धार पाने की शिक्षा दी जा रही है। यह स्वभाव पवित्र शास्त्र अध्ययन के समय बपतिस्मा से पहले उनमें निर्माण की जा सकती है। परंन्तु अधिकतर यह कमज़ोरी "पुराने" शिष्यों को देखकर अपने आप नए शिष्यों में आ जाती है। इस प्रकार का स्वभाव क्रूस के कार्य को महत्वहीन बना देता है। इतने ही दु:ख की बात यह भी है जब कोई अपने सोच की शिक्षण पर गर्व करने लगता है कि उसने अनुग्रह के सही अर्थ को समझ लिया है, जो है, सिर्फ किसी के दोष पर ध्यान न देना और यही बात यह प्रोत्साहन भी देता है कि हमारे प्रभू यीशू ख्रिस्त की ओर कुनकुना संकल्प रखे। स्पष्ट है कि हमें संन्तुलन बनाए रखना है – इसीलिये यह अध्ययन ज़रुरी है।

विश्वास

इब्रानियों ११:६ परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए हमें विश्वास की आवश्यक्ता है। लेकिन विश्वास क्या है?
याकूब २:१४–१७ बौध्दिक भरोसे से कहीं बढ़कर विश्वास है – इसका फल है कर्म। कर्म बिना विश्वास मरा हुआ है।
गलातियों ५:६ सिर्फ धार्मिक कृत्य (खतना) का कोई महत्व नहीं – परंन्तु महत्व है विश्वास का जो प्रेम द्वारा स्वयं को व्यक्त करे।

कर्म

इफि.२:८–१० पवित्र शास्त्र स्पष्ट रुप से यह सिखाता है कि हम हमारे स्वयं की कोशिशों से उध्दार नहीं पा सकते। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर

हम से किसी बात की इच्छा नहीं रखते। उद्धार एक न कमाया जानेवाला वरदान है, लेकिन यह आज्ञा मानने के शर्त से जुड़ा है। हमारी नौकरियों में "कामों की एक सूचि" है जिसे हमें करना होता है – फाईलों को पढ़ना, क्या करना है यह देखना, फोन का जवाब देना या फोन करना, ई–मेल का जवाब देना आदी। इसी तरह परमेश्वर ने भी हमारे लिए भले काम रखे हैं, जिसे हम, हमें मिले अनुग्रह के कारण आभारी होकर करें।

२राजा ५:१–१५ नामान कोड़ से पीड़ित था। उसे मदद की ज़रुरत थी। लेकिन वह अपने तरीके से काम करना चाहता था(व.१२)। अंत में, उसने आज्ञा मानी और चंगाई का वरदान प्राप्त किया। ऐसा नहीं था कि ७ बार डुबकी लगाने के कारण उसे चंगा होने का हक मिला। लेकिन उसकी आज्ञाकारिता ने उसे परमेश्वर का वरदान पाने योग्य बनाया।

अनुग्रह

तीतुस ३:५ हमारा उद्धार हमारे धर्म के कामों के कारण नहीं, परंन्तु उसकी दया के कारण हुआ है। अनुग्रह एक कृपा और दया है, जिसके योग्य हम नहीं हैं।

Grace = **G**od's **R**iches **A**t **C**hrist's **E**xpense.

अनुग्रह = परमेश्वर की महानता यीशू की कीमत पर।

यहूदा:४ यह सच, कि हम अनुग्रह के योग्य नही या अनुग्रह कमा नहीं सकते, हमें इस बात की अनुमती नहीं देता कि हम पाप कर सकते हैं।

१कुरी.१५:१० परमेश्वर के अनुग्रह का हम पर प्रभाव पड़ना चाहिये – कि हम आभारी होकर परमेश्वर के लिये परिश्रम से कार्य करें।

तीतुस २:११–१४ अनुग्रह ही के कारण हम संयम, धर्म और भक्ति से जीवन बिताने का प्रयास करते हैं।

उपयोग

रोमियों ५:६–८ जब हम निर्बल ही थे तब मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिए मरे। हमें यह याद रखना चाहिये कि परमेश्वर के अनुग्रह के कारण ही, हम उद्धार की आशा रख सकते हैं। जब हम पापी थे तब ही परमेश्वर ने हम पर अनुग्रह दिखाया।

मत्ती ७:१–२ दूसरों का न्याय करते समय अनुग्रह के कारण हमें चौकन्ना रहना चाहिये।

रोमियों १४:१ जो विश्वास में कमज़ोर हैं, हमें उनको अपनाना चाहिये।

लूका ११:१–४ यदि हममें अनुग्रह है तो हम हरएक को जो हमारे विरुद्ध पाप करता है क्षमा करेंगे (मत्ती ६:१५)।

रोमियों १२:३ स्वयं के बारे में साधे विचार रखें, ज़्यादा ऊंचा ना समझें।

पुरुषों में से फिलिप्पुस एक है। वह सामरी प्रदेश में गया और वहाँ कई चमत्करों के साथ बहूत से लागों का विश्वास बदलने का काम आरंम्भ किया। आओ देखें कि क्या हुआ....

प्रेरित ८:१४–२३ यरुशलेम की कलीसिया ने प्रेरित पतरस और यूहन्ना को सामरी प्रदेश में भेजा। यह उन्होंने इसलिये किया क्योंकि वहाँ पर कई पारीवारिक गुट आरंम्भ हो रहे थे और केवल फिलिप्पुस ही था जो चमत्कार कर सकता था। और क्योंकि फिलिप्पुस प्रेरित नहीं था इसलिये वह किसी को चमत्कार की शक्ति नहीं दे सकता था। लेकिन प्रेरित यह कर सकते थे, इसलिये वे आए ताकि सामरी नगर में अगुवों को नियुक्त करें और उन्हें चमत्कार की शक्ति दें (व.१६)। शिमौन एक जादुगर था जिसे फिलिप्पुस ने बपतिस्मा दिया था। वचन १८ में जब उसने देखा कि प्रेरित दूसरों को चमत्कार करने की शक्ति दे सकते थे, तो उसने भी यह शक्ति पाना चाहा, ताकि वह दूसरों को चमत्कार करनेवाले बना सके। उसने उन्हें पैसा देना चाहा (व.१९)!

उसके इस प्रस्ताव का प्रेरितों ने कड़ा विरोध करते हुए उसे डांटा(व.२०)। पतरस ने कहा कि उसका मन सही नहीं है (व.२१)। पैसा चमत्कार की शक्ति को नहीं खरीद सकता। सिर्फ प्रेरित ही यह शक्ति दूसरों को दे सकते थे, और जब वे मर गए, और वे सारे लोग भी मर गए जिन्हें प्रेरितों ने छूकर यह शक्ति दी थी, तब चमत्कार भी मर गए। निस्संदेह, आज भी परमेश्वर प्रार्थनाओं का उत्तर देते हैं, और अपनी ईच्छा अनुसार हमारी प्रार्थना के उत्तर में वे चमत्कार कर सकते हैं। लेकिन यह चमत्कार वैसे नहीं हैं जैसा हमने पहली शताब्दी में देखे, जब प्रेरितों द्वारा छूए जानेपर प्रत्येक को पवित्र आत्मा ने महान सामर्थ दिया कि वे संदेशों को सच्चा ठहरा सकें कि वह परमेश्वर की ओर से ही आए हैं।

आज भी हमारे जीवन में परमेश्वर चमत्कार कर सकते हैं। क्या आप चमत्कारों के लिये परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं? क्या आपने उनसे महान चिज़ों की मांग की? जब हम मांगेंगे वह देगा।

५. लोगों को संकल्प पाना चाहिये – १कुरि.१४:१८–२४ ।

१कुरिन्थियों में अध्याय १२–१४ पूर्णत: पवित्र आत्मा के चमत्कारी वरदानों पर केंन्द्रित हैं, क्योंकि कुरिन्थ की कलीसिया का सारा ध्यान प्रचार पर नहीं परन्तु वरदानों पर था और वे प्रेरितों को बुरा भला कह रहे थे। पौलुस ने यहाँ कुछ दिलचस्प बातें कहीं। वचन १९ में उसने कहा कि न समझनेवाली भाषा में १०,००० शब्द कहने से अच्छा, लोगों को सिखाने के लिये बुद्धि से ५ शब्द कहना उसे अधिक अच्छा लगता है। वचन २०, में उन्होंने लोगों को कहा बच्चों जैसी समझवाले न बनो। वह समझाता है कि भाषा एक चिन्ह, एक चमत्कार है, अविश्वासियों के साम्हने यह साबित करने के लिये कि हम परमेश्वर की ओर से हैं (व.२२)। लेकिन भविष्यवाणी, अर्थात् प्रचार विश्वासियों के लिये है (व.२२)। इसीलिये कलीसिया का ध्यान "अन्य भाषा में बोलने" पर नहीं, परन्तु प्रचार पर होना चाहिये, ताकि लोग अपने पापों के

को मसीह के शिष्य बना सकें। आज की पिन्तेकुस्ती कलीसियाएं "भाषा" का उपयोग पूर्णत: अलग तरीके से करते हैं। वे सिर्फ अस्पष्ट बोलते हैं, और वे कहते हैं कि यह परमेश्वर से है। यह सही नहीं है।

एक व्यवहारिक चुनौती : नई भाषाएं सीखना अच्छी बात है। यदि आपको अंग्रजी नहीं आती है, अंग्रेजी सीखें। जिस शहर में आप रहते हैं उस शहर की मुख्य भाषा यदि आपको नहीं आती, तो उसे सीखें। परमेश्वर के लिये अनेक नए लोगों को बदलने में यह आपकी मदद करेगा।

पवित्र आत्मा से बपतिस्मा

पवित्र आत्मा से बपतिस्मा का यही (प्रेरित २) चमत्कार परमेश्वर द्वारा प्रेरित १० में दोहराया गया था, जब उन्होंने अन्य जाति के लोगों को अन्य भाषा में बात करने में मदद किया ताकि पतरस के साम्हने यह साबित किया जाए कि वह लोग भी पानी से बपतिस्मा लेने के योग्य थे (प्रेरित १०:४४-४६)। यह " पवित्र आत्मा से बपतिस्मा" और इसके बाद अन्य भाषा में बात करना पवित्र शास्त्र में सिर्फ दो बार ही आता है: एक, प्रेरित २ [३३इ.स.], फिर दुबारा प्रेरित १०[४१ इ.स.]। इफि.४:५[६२ इ.स. में लिखा गया] के अनुसार, सिर्फ " एक ही बपतिस्मा" है जो सिर्फ पानी से दिया जा सकता है। इस तरह "पवित्र आत्मा से बपतिस्मा" जिसकी प्रतिज्ञा यीशु द्वारा प्रेरित १:५ में दी गई थी वह सिर्फ प्रेरितों के लिये एक विशेष उपहार था, जबकि "पवित्र आत्मा का दान" जो बपतिस्मा के समय प्राप्त होता है वह सबके लिये है (प्रेरित २:३८-३९)। प्रेरित २ और प्रेरित १० को छोड़, दूसरे समयों पर लोगों ने अन्य भाषा में बात तब ही किया जब प्रेरितों ने उन पर अपना हाथ रखा। लेकिन आज प्रेरित जीवित नहीं हैं, तो वे हमपर अपना हाथ नहीं रख सकते, और हमारे लिये परमेश्वर का वचन हर भाषा में लिखा उपलब्ध है। तो हमें "अन्य भाषा" के दान की आवश्यक्ता नहीं है, जैसे उनको थी। लेकिन उन दिनों परमेश्वर का यह एक शक्तिशाली मार्ग था लोगों को यह दिखाने के लिये कि वह उनके साथ हैं।

४. पैसा इस शक्ति को खरीद नहीं सकता : प्रेरित ६:५-८ नए नियम की कलीसिया के शुरुवाती दिनों में पवित्र आत्मा के विशेष चमत्कारी वरदान मिला करते थे। इन वरदानों को प्रेरितों ने लोगों पर अपना हाथ रखकर उन्हें दिया (व.६,८; और प्रेरित ८:६,८, ८:१८, रोमियों १:११, २तीमु.१:६)। वचन ५ में आप देख सकते हैं कि प्रेरितों के हाथ रखने से पहले ही स्तिफनुस पवित्र आत्मा से भरा था। लेकिन उसपर प्रेरितों के हाथ रखने के बाद ही, वह भी चमत्कार कर सका। यह आवश्यक था क्योंकि जो लोग यीशु से कभी नहीं मिले थे उन्हें इन लोगों द्वारा बोले संदेश पर विश्वास करने के लिये चमत्कार दिखाना आवश्यक था। आज, सुसमाचार सही है यह साबित करने के लिये हमें चमत्कारों की आवश्यक्ता नहीं है - हमारे पास पवित्र शास्त्र है! प्रेरित ६ में

अध्ययन ४

मसीह के शरीर में रिश्ते

जब कोई छुड़ाए हुओं के जनसमुदाय में प्रवेश करता है, तो रिश्ते असाधारण रुप से रुपांतरित होते हैं! स्वयं पर ध्यान केन्द्रित करने के बजाए, हमें "दूसरों को हम से बेहतर समझो"(फिलि.२:३)। परंन्तु जब तक हम कलीसिया/मेल-मिलाप और मसीह के शरीर को भिन्न-भिन्न गुटों की धारणाओं में बांटते रहेंगे, तब तक इन पवित्र शास्त्रिय सिध्दान्तों को कार्यान्वित नहीं कर पाएंगे। कलीसिया में उपस्थिती लगाना काफी नहीं है, यह एक अवसर है हमारी आवश्यक्ताओं का ध्यान रखने का। और विश्वासियों के इस जनसमुदाय में अनेक बातें हैं जिनका ध्यान रखना है! संक्षिप्त में यदि नए मसीहियों को कार्यात्मक और व्यवहारिक रुप से शरीर में अधिरोपण न किया जाए, तो निश्चित ही फिर से संसार उन्हें अपने अधिकार में ले लेगा। और यदि हमारी मिनिस्ट्री में यही हो रहा है तो, हम असफल हो रहे हैं (१कुरी.३:१२-१५)। नए मसीहियों को स्थानिक कलीसिया में एकबद्ध करने का सबसे महत्वपूर्ण समय है उनके बप्तिस्मा के बाद के कुछ हफ्ते और दिन।

संसार में जो हैं उनसे अलग क्यों?

यूहन्ना १३:३४-३५ यीशु हमें एक दूसरे से वैसा ही प्रेम करने की आज्ञा देते हैं जैसा उन्होंने हमसे किया। प्रेम का यही गुण हमें मसीह होने के नाते दूसरों से भिन्न/अलग बनाता है।

मरकुस ३:३४-३५ यदि हम परमेश्वर की इच्छा पर चलें तो हम यीशु के भाई और बहिन हैं। इस साधारण उद्देश्य के कारण, मसीही रिश्ते खून के रिश्तों से बढ़कर होते हैं।

वे कैसे अलग हैं?

१पतरस १:२२ एक दूसरे के लिये हमारा प्रेम निष्कपट और मन की गहराई से होना चाहिये!

१यूहन्ना ३:१६ यीशु हमारा उदाहरण है। दूसरों केलिये हम कितना त्याग करने को तैयार हैं इससे हमारे प्रेम को मापा जा सकता है।

व्यवहार में इसका क्या अर्थ है?

१थिस्स.५:१२-१६ अलग-अलग लोगों की अलग-अलग ज़रुरतें हैं।

अगुवों को आदर की ज़रुरत है (व.१२-१३)। हर किसी को शान्ति की ज़रुरत है (व.१३)। निकम्मे को चेतावनी की जरुरत है (व.१४), निराशों (डरपोक) को प्रोत्साहन की ज़रुरत है (व.१४), बेसहारों को सहारे की ज़रुरत है (व.१४), हरएक को धीरज की ज़रुरत है (व.१४), किसी को बदले की ज़रुरत नही है (व.१५)। हर समय हमें आनन्दित रहना है (व.१६)!

१यूहन्ना ३:१७ गरीबों की मदद करो-एक दूसरे की सांसारिक ज़रुरतों पर ध्यान दो।

कुलु.१:२८–२९ उनको मसीह में सिध्द (समझदार) करके उपस्थित करने के लिये पौलुस ने बहुत संघर्ष किया।

हमें एक दूसरे के बारे में चिंन्तित रहना चाहिये कि वे धार्मिक्ता में बढ़िया करें।

निष्कर्ष

इफि.४:२९–३२ हमें हमेशा उन्नति भरी बातें बोलनी चाहिये।

इफि.५:२१ मसीह के भय में हमें एक दूसरे के अधीन रहना चाहिये।

इब्रानियों १३:७,१७ हमें कलीसिया के अगुवों का अनुकरण और आदर करना चाहिये, जिन्हें भेड़ों की आत्मा का लेखा परमेश्वर को देना है।

दूसरे वचन

प्रेरित २:४२–४७ यह पहले शताब्दि के शिष्य हर दिन मिला करते थे, आनन्दित थे, सबकुछ एक दूसरे के साथ बांटते थे।

प्रेरित ४:३२–३५ अधिक बांटना और अधिक आनन्दित संगती!

रोमियों १२:५ हम एक दूसरे के हैं।

१कुरी.१२:१२–२७ हम एक देह हैं – हर अंग महत्वपूर्ण है। हर अंग को दूसरे अंगों का ध्यान रखना चाहिये।

इब्रा.१०:२४–२५ हमें मीटिंग मिस करने की आदत में नही पड़ना चाहिये। हमें एक दूसरे को प्रेरणा देते(उसकाते) रहना चाहिये !

इब्रा.१३:१–२ परमेश्वर अतिथि–सत्कार की अपेक्षा करते हैं, और इसका फल महान आशिर्षे भी हो सकता है!

याकूब १:१९–२१ हम सभी को बोलने में धीरा, सुनने में तत्पर, और क्रोध में धीमा होना चाहिये।

३यूहन्ना:५ अनजानों की मदद करना सही है!

उपयोग

दूसरे शिष्यों से रिश्ता बढ़ाने के लिये निश्चय करें कि आप उन्हे पत्र लिखें या फोन करें। इस क्षेत्र में व्यक्तिगत ध्येय बनाएं। एक दूसरे के लिये हरदिन प्रार्थना करें। आनेवाले महीने की सभाओं में हर सप्ताह कम से कम एक नए व्यक्ति से अपना परिचय करें। अपने भाईयों और बहिनों को पत्र, कार्ड, एस.एम.एस., और ई–मेल लिखें। कलीसिया के अगुवों को भी प्रोत्साहन देने के लिये लिखें।

लिये कि जो उनसे बात कर रहे हैं वे स्वयं वही हैं। सृष्टि का निर्माण, बाढ़, लाल समुद्र का दो भागों में बंटना, रेगीस्तान में मन्ना, आकाश से एलिय्याह के लिये आग, और यीशु के चमत्कार सभी यह साबित करते हैं कि परमेश्वर बोल रहे थे। **इब्रा. १:१–३,** यह कहता है कि अब परमेश्वर यीशु के द्वारा हमसे बातें करते हैं। परमेश्वर की ओर से यीशु अन्तिम संदेश हैं। **इब्रा. २:१–४**, हमें निश्चित करना है कि हम बहक न जाएं। हम जानते हैं कि यह संदेश सच है क्योंकि परमेश्वर ने चमत्कारों के द्वारा इसकी पुष्टि की है (व.३–४)। वचन ४ के अनुसार, परमेश्वर ने यह चमत्कार अपने इच्छा के अनुसार किये। हम परमेश्वर से माँगते हैं, " मेरे लिये एक चमत्कार करो"। वे शायद चमत्कार करें भी, यदि वे चाहें तो, लेकिन यह उनपर निर्भर करता है, हम पर नहीं!

पवित्र शास्त्र अति स्पष्ट है। चमत्कारों का एक उद्देश्य था। वह परमेश्वर के कहे नए संदेशों को साबित करते हैं। दूसरे अनुच्छेद जो यह सिखाते हैं वह हैं: **निर्गमन ४:५, १राजा १७:२४, मरकुस १६:२०, प्रेरित २:२२–२४, प्रेरित १४:३।** परमेश्वर के लिखित वचनों को साबित करने के लिये चमत्कारों की आवश्यक्ता नहीं है, जैसे हम धनी व्यक्ति और लाजरस की कहानी में देखते हैं (लूका १६:२७–३१), और जब थोमा शक करता है (यूहन्ना २०:३०–३१)।

परमेश्वर आज भी चमत्कार कर सकते हैं, लेकिन यह उनकी इच्छा पर है। वह प्रार्थनाओं का उत्तर अवश्य देते हैं। लेकिन वह उस प्रकार के चमत्कार नहीं करते जिस प्रकार से पिन्तेकुस्ती सभा दावा करती है, जहाँ वे लोगों को मंच पर लाते हैं और उन्हें "चंगा" करते और फिर उनसे पैसे माँगते हैं! हमें चमत्कारों को नहीं वरन् धार्मिकता को देखना चाहिये। मत्ती १६:४ में यीशु ने स्वयं कहा, " इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढते हैं, पर नबी योना के चिन्ह को छोड़ और कोई चिन्ह उन्हें न दिया जाएगा।"

३. अनेक नई भाषाएं = अनेक नए धर्म परिवर्तन। आओ हम कलीसिया के आरंम्भ को देखें। प्रेरित २ में, सारे संसार भर से धार्मिक लोग पिन्तेकुस्त का धार्मिक पर्व मनाने यरुशलेम आए थे। वे सभी भिन्न–भिन्न भाषा बोल रहे थे। ५० दिन पहले ही यीशु की मृत्यु हुई थी, और सभी प्रेरित एकसाथ एक जगह पर थे। **प्रेरित २:१–८** यहाँ हम देखते हैं कि परमेश्वर ने एक अद्भुत चमत्कार किया। वहाँ आंधी और आग थे (व.२–३)। सभी "अन्य भाषा" में बोलने लगे (व.४)। अंग्रेजी शब्द "टंग" का "भाषा" अच्छा हिन्दी अनुवादी शब्द है। टंग शब्द का अर्थ है भाषा। वचन ८ देखें। यह भाषाएं बकबक या कूड़ा नहीं थीं, वे असली भाषाएं थीं जिन्हें लोग समझ सकें।

जब यरुशलेम के सभी लोगों ने प्रेरितों को अपनी–अपनी भाषा में बोलते सुना, वे चकित हुए! कल्पना करें कि आज मैं, ऊर्दू , फिर मलयालम, फिर गुजराती, फिर ओरिया में बोलने लगूं ! आप आश्चर्यचकित होंगे या नहीं ? लेकिन ध्यान रखें कि उन दिनों, उन सभी भाषाओं में पवित्र शास्त्र उपलब्ध नहीं था। इसीलिये प्रेरितों को अन्य भाषा में बोलने के चमत्कार के वरदान की आवश्यक्ता थी, ताकि वे अनेक नए लोगों

प्रयत्न करें कि जिन्हें भी हम जानते हैं उनसे उत्तम रिश्ता रखें।

निष्कर्ष:

आज जो चार अंक हमने देखे वह **सत्य** बताता है। पवित्र आत्मा **सत्य** है, और यदि हम उसे अवसर दें तो वह हमारे जीवन पर यथार्थ प्रभाव डाल सकता है। इस सप्ताह की चुनौती आसान है। जिनके साथ आप रहते हैं उन सभी के साथ एक मीटिंग रखो। आपका उनसे बेहतर रिश्ता बने इसके लिये आपको क्या करना चाहिये इस विषय पर उनसे बात करो। फिर उन्हें कहने का अवसर दो कि किस क्षेत्र में वे सुधार ला सकते हैं। फिर सभी को एक दूसरे को क्षमा कर प्रोत्साहन देना चाहिये! कोई चुनौती नहीं केवल कबूली और पश्चाताप! यह सब कैसा रहा इसके बारे में आओ अगले सप्ताह हम बात करें!

अध्ययन १७

पवित्र आत्मा को समझना – ३

प्रेम सदा बना रहता है

आज हम बात करेंगे कुछ ऐसे गलत धारणाओं की जो लोगों को पवित्र आत्मा के प्रति है, और परमेश्वर के वचनों का उपयोग कर इन धारणाओं को हम कैसे सही कर सकते हैं।

१. निश्चित करो आप आज्ञा पालन करोगे – मत्ती ७:२१–२३।

कुछ लोग यह विश्वास करते हैं कि यदि उनके जीवन में उन्होंने चमत्कार का अनुभव किया, तो उनका उद्धार होना ही चाहिये। हो सकता है कि परमेश्वर ने उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया, या फिर बीमारी से चंगा किया हो। शायद वे एक पिन्तेकुस्ती सभा में गए और कुछ महसूस किया। लेकिन यहाँ यीशु कुछ अचंम्भित करनेवाली बात कहते हैं। न्याय के दिन, अनेक लोग कहेंगे, " यीशु, हमने आपके नाम में महान कार्य किये हैं, क्या हम उद्धार नहीं पाएंगे?" परन्तु यीशु कहेंगे, " मैंने तुमको कभी नहीं जाना।" वचन २१ और २३ के अनुसार, उन्होंने पिता की इच्छा पूरी नहीं की। वे यीशु को नहीं जानते थे। उन्होंने उसकी आज्ञा नहीं मानी।

पवित्र शास्त्र अति स्पष्ट है, चमत्कार और अनुभव **उद्धार साबित नहीं करते**। मुद्दा है आज्ञा पालन। दूसरे अनुच्छेद जो इसका उल्लेख करते हैं वह हैं: **मत्ती २४:२४, १शमु.१९:१८, व्य.विवरण १३:१–११, और २थिस्स. २:९–१२।**

२. चमत्कार परमेश्वर के कहे संदेशों को साबित करते हैं।

संम्पूर्ण पवित्र शास्त्र के शुरु से अंत तक, जब कभी भी परमेश्वर नई सच्चाईयों को प्रकट करना चाहते थे, तब उन्होंने चमत्कार किये उनके लोगों को यह बताने के

अध्ययन ५

नए नियम की कलीसिया – तीन पहलू

शिष्य होने के नाते हम यह अपेक्षा करते हैं कि हमारी प्रथाएं वचनों पर आधारित हों – और कलीसिया के नाते हमारी प्रथाएं पवित्र शास्त्र के शिक्षणों पर आधारित होनी चाहिये। इस अध्ययन में हम प्रभू भोज, दान और कबूली– इन तीन पहलूओं को हमारी कलीसिया की प्रथाओं में गिनेंगे जो गहराई से नए नियम के शिक्षणों और प्रथाओं पर आधारित हैं।

प्रभू भोज

मत्ती २६:२६–२९ प्रभू भोज का आरंभ फसह के भोज (यहूदी पार्श्वभूमि) के रुप में हुआ। रोटी मसीह का शरीर और दाखरस मसीह का लहू है।

१कुरी.११:२३–२९ यीशु ने प्रभू भोज की प्रथा का आरम्भ किया। यह प्रभू के मृत्यु का प्रचार है, जब तक वे वापस न आएं। इसे खाने से पहले हमें अपने आप को जांचना चाहिये।

प्रेरित २०:७ मसीही इस रोटी को तोड़ने की ख़ातिर एकजुट हुए। पहली शताब्दि की कलीसिया के इतिहास और नए नियम के प्रमाण से यूँ प्रतीत होता है कि शिष्य कम से कम सप्ताह में एक बार रोटी तोड़ने के लिये एकसाथ जमा होते थे।

दूसरे वचन:

निर्गमन १२, मरकुस १४:१२–२६, लूका २२:७–२०, यूहन्ना ६:४८–५८, प्रेरित २:४२।

दान (कलीसिया की ज़रुरतों के लिए)

मत्ती ६:२१ जहाँ तुम्हारा धन होगा वहीं तुम्हारा मन भी होगा।

मत्ती ६:२४ आप परमेश्वर और पैसा दोनों की सेवा नहीं कर सकते, इसलिये निश्चित करो कि प्रथम स्थान परमेश्वर का हो।

नीतिवचन ३:९–१० क्या आप अपने पैसों से परमेश्वर की प्रतिष्ठा कर रहे हैं? उन्हे अपनी कमाई का "पहला फल" दो। पुराने नियम में वे १०% देते थे। यीशु १००% की अपेक्षा करते हैं (लूका १४:३३), हमारे पास उतना रखकर जितने की हमें ज़रुरत है।

१कुरी.१६:१–२ निरंतर दान इकट्ठा करना पवित्र शास्त्र पर आधारित है। हमें पहले से ही योजनाबद्ध होना चाहिये।

१तीमु. ५:१७–१८ कलीसिया के लिये काम करने वाले को वेतन देना पवित्र शास्त्र पर आधारित है – दांवनेवाले बैल का मुंह बांधना नही चाहिये। जैसा यीशु ने कहा, "मज़दूर को उसकी मज़दूरी मिलनी चाहिये" (लूका १०:७)।

२कुरी. ८:१–१५ मकिदूनिया के लोग त्याग करनेवाले और दूसरों के लिये एक उदाहरण थे (व.१–४)। हमें देने के अनुग्रह में बढ़ने का प्रयास करते रहना चाहिये

(व.७)। यीशु निर्धन हुए ताकि हम धनी बनें (व.९) और वह हमारे आदर्श हैं।
२कुरी.९:६ जो हम बोते हैं वही हम काटते हैं।

दूसरे वचन:

निर्गमन ३६:६–७, मरकुस १२:४१–४४, लूका ६:३८, १तीमु.६:५–१०,१७

कबूली

याकूब ५:१६ उन्हें एक दूसरे से अपने पाप कबूल कर एक दूसरे की चंगाई के लिये प्रार्थना करना था। हम सभी पापी हैं। हम सभी को मदद की आवश्यक्ता है।
१यूहन्ना १:५–१० परमेश्वर ज्योति है; हमें ज्योति में चलना चाहिये। ज्योति में चलने का अर्थ ये नहीं कि हम पापरहित हैं, यद्यपि हमें अपने पापों के प्रति खुला रहना है!
नीतिवचन २८:१३–१४ जब हम अपने पापों को कबूल करते और छोड़ देते हैं तो हम पर दया होती है और हमारा मन कोमल रहता है।

अध्ययन ६

मार्गदर्शन/शिष्यता पाना – परमेश्वर की योजना

हालांकि मार्गदर्शन देने के तरीके के बारे में कई विवाद हैं, फिर भी इस बात को कोई झुठला नहीं सकता कि नया नियम मसीहियों के जीवन में मार्गदर्शन(शिक्षण/समझ) देने की आवश्यक्ता का शिक्षण देता है। मार्गदर्शन पाने के महत्वपूर्ण प्रक्रिया का ज्ञान किसी को बप्तीस्मा के पहले ही दे देना चाहिये। इस अध्ययन का मकसद है नए मसीह में मार्गदर्शन पाने के प्रति खुला रहने का स्वभाव पनपे, साथ ही उसे यह भी याद दिलाना कि अंन्त में यह उस व्यक्ति की जिम्मेदारी है जिसने यह अंगीकार किया, "यीशु मेरा प्रभू है" कि वह अंत तक अपने मसीही जीवन की बढ़ौतरी के लिये लगातार प्रयत्न करता रहे। मार्गदर्शन मात्र मानवी उचितता नहीं; यह परमेश्वर की आज्ञा है (मत्ती २८:१९)।

मार्गदर्शन / शिष्यता पाना

२तीमु.२:२ मार्गदर्शन लगातार एक से दूसरे को देते रहने की प्रक्रिया है। हम अक्सर देख–देखकर ही सीखते हैं।
१तीमु. ३:६–७ थिस्सलुनीकियों के पास पौलुस की महान यादें थीं। उनके विश्वास के बारे में सुनकर पौलुस बहुत खुश था।
सभी सम्बन्धित लोगों को मार्गदर्शन का अनुभव मसीह में महान यादों को बनाने जैसा होना चाहिये।
कुलु.१:२८–२:१ मार्गदर्शन का मकसद है समझ/पूर्णता/सिद्धता। किसी भी रिश्ते में जहाँ चुनौतियां हैं कठिनाईयां होंगी, परंन्तु चुनौतियां प्रेम में दी जाती हैं (हमें यह समझना चाहिये)।

से हम पुराने, पापपूर्ण विचारों में लौट जाते हैं। अपने मन के बारे में सोचो। क्या आपके विचार पवित्र रहे हैं? क्या वे परमेश्वर की आत्मा को प्रसन्न करते हैं? यदि आपके विचार इस गुट को वीडियो पर दिखाए जाएं तो क्या आप खुश होंगे?
रोमियों ८:९–११ यह पवित्र शास्त्र के पवित्र आत्मा के वचनों में से एक महत्वपूर्ण वचन है। यहाँ यह हमें यह सिखाता है कि प्रत्येक मसीही के भीतर पवित्र आत्मा वास करता है (व.९–११)। जब हमारा बपतिस्मा हुआ तब हमने यह दान पाया था (प्रेरित २:३८)। यदि किसी में यह आत्मा नहीं है तो वह मसीही नहीं है (व.९)। हम सभी जिनका बपतिस्मा हुआ है हमारे पास एक हथियार है, जिससे हम पाप पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।
रोमियों ८:१२–१४ पौलुस यहाँ पर वर्णन करता है कि आत्मा के द्वारा हम हमारे **"पापों को मार"** सकते हैं (व.१३)। यह एक अप्रतीम समाचार है। हमें **पाप पर आत्मा से आक्रमण** करना चाहिये। मैं आपको एक उदाहरण देना चाहता हूँ। मानो कि आपके कमरे में एक झींगुर या एक खटमल है। उसे मारने के लिये आप बत्ती जलाते हो, उसका पीछा करते हो, उसे घेर लेते हो, और उसे अख़बार, जूते या फिर किसी और चीज़ से मार देते हो। पवित्र आत्मा एक प्रकाश है जो पाप को आपके साम्हने लाता है जिसे आपने मार डालना है। फिर आप उस पाप का पीछा करते हैं, अपने मार्गदर्शक और वे लोग जो आपको अच्छी तरह से जानते हैं उनसे बात करके उसे और साफ–साफ देखने लगते हो, और फिर पवित्र आत्मा से उसे नष्ट कर देते हो। पवित्र आत्मा हमें विजयी मसीही जीवन जीने का अवसर देता है। और यदि कोई पिन्तेकुस्ती हैं और सिद्धान्त के विषय में बातें करने लगें, तो उनसे पहले उनके जीवन के पापों के बारे में बात करो। यदि उनमें आत्मा है तो, पाप उनपर नियंत्रण नहीं कर सकता!
४. आत्मा के साथ शान्ति में रहो – इफि.४:२९–३२। यह एक महान अनुच्छेद है। यह दूसरे शिष्यों के साथ अच्छा रिश्ता रखने की बात करता है। हमें हर समय प्रोत्साहन देनेवाले बनना चाहिये न कि पीठ पीछे बात करनेवाले और समालोचन करनेवाले (व.२९)। हममें से भी कईयों को यह सुनना चाहिये। यदि आप नकारात्मक और असंतोषी रहे हैं, तो अब यह बंद करो! यह सही नहीं है। और वचन यह भी कहता है कि कड़वाहट, क्रोध, बैरभाव इत्यादि से छुटकारा पाओ। हमें कृपालु, करुणामय और क्षमा देनेवाले बनना चाहिये। विशेषत: वचन ३० महत्वपूर्ण है। यह कहता है कि हमें, "परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित" नहीं करना चाहिये। जब हम दूसरों के साथ सही बर्ताव/संम्बन्ध नहीं रखते तो पवित्र आत्मा दु:खी होता है।
पवित्र शास्त्र सिखाता है कि आत्मा हमारे हृदय में बसता है। किसी घर में यदि लोग एक दूसरे के साथ सही बर्ताव नहीं कर रहे हैं तो, घर में हरएक अप्रसन्न होगा। इसी प्रकार, यदि लोगों से हमारा रिश्ता सही नहीं है तो, आत्मा जो हमारे साथ रहता है दु:खी हो जाता है। आओ हम आत्मा को दु:खी न करें! आओ हम पूरा

प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम से भरा होगा। इस सूची के बारे में सोचीये। क्या यह आपके जीवन का वर्णन करता है? यदि नहीं तो आप आत्मा को आपके चरित्र पर काम करने का अवसर नहीं दे रहे हैं। अपना चरित्र यीशु के सुपुर्द करो और उन्हें आपको बदलने का अवसर दो! कभी कभार लोग पवित्र आत्मा के बारे में बहुत सारी बातें करते हैं, और फिर भी वे यह भूल जाते हैं कि सबसे महत्वपूर्ण काम जो आत्मा करता है वह है, हमारे जीवन को बदलना। यदि कोई आत्मा के बारे में विवाद करना चाहता है तो आपको तुरन्त यह दिखाई पड़ेगा कि उनमें मेल, नम्रता, कृपा, आनन्द और प्रेम नहीं है जिसकी बात वचन २२–२४ करता है। यदि वास्तव में उनके जीवन में आत्मा होता तो वे विवाद नहीं करते!

२. आत्मा के द्वारा प्रचार करो – प्रेरित ८:२६–३०। वचन २६ में हम देखते हैं कि स्वर्गदूत फिलिप्पुस को एक विशेष मार्ग से जाने को कहता है। इस स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस को वहाँ प्रचार करने के लिये भेजा। और उसने वहाँ एक व्यक्ति को रथ में बैठे जाते देखा। वचन २९ कहता है कि पवित्र आत्मा ने फिलिप्पुस को रथ के निकट जाने को कहा। फिलिप्पुस उस रथ की तरफ दौड़ा (व.३०), और यह व्यक्ति पूरी तरह से खुला था! मेरा यह अटल विश्वास है कि जब आप प्रचार करने के लिये बाहर जाएंगे, और यदि आप प्रार्थना करें और सुनें तो, पवित्र आत्मा आपको खुले व्यक्तियों से मिलाएगा। जब आप बस में जा रहे हों या बस का इंतज़ार कर रहे हों, और आपको **पता** था कि आपको प्रचार करना है, क्या उस समय आपके पास प्रचार करने का समय था? मैं आपको एक चुनौति देना चाहता हूँ। जब आपका मन ये कहे कि, "उस व्यक्ति को आमंत्रण दो" या "उस स्त्री से बात करो", तो करो! यह है पवित्र आत्मा का आपको याद दीलाना ! पवित्र आत्मा को परमेश्वर के वचनों का प्रचार करना अच्छा लगता है। **१थिस्स.५:१९** हमें चेतावनी देता है कि आत्मा की आग को न बुझाओ। पवित्र आत्मा आपके भीतर जल रहा है। वह प्रचार करना चाहता है। निस्सन्देह इस आग को और हवा दो!

३.आत्मा से पाप पर आक्रमण करो – रोमियों ८:१–४। यहाँ यह कहता है कि , जो मसीह यीशु में हैं, उनपर **दंड की आज्ञा नहीं,** क्योंकि परमेश्वर की आत्मा ने हमें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया है। पाप पर काबू पाने का पहला उपाय है यह जानना कि **आप बदल सकते हैं**। परमेश्वर आपके साथ हैं ! आपको और पाप नहीं करना है! आओ हम **रोमियों ८:५–८** पढ़ते रहें। जब हम शिष्य नहीं हैं तो हमारे मन पाप पर टिके होते हैं। लेकिन जब हम शिष्य बन जाते हैं, तब हम हमारे मनों को बदल लेते और उन बातों पर लगाते हैं जिनकी ईच्छा आत्मा करता है। यह एक टी.वी. की तरह है। शिष्य बनने से पहले यह एक गंदे चॅनल पर रहता है, जहाँ हिंसा, स्वार्थ और अश्लीलता है। लेकिन जब हम बप्तीस्मा ले लेते हैं, हम इन चॅनलों को बदल देते हैं! दुर्भाग्यवश, कभी–कभी ग़लती से हम पुराने, पापपूर्ण विचारों में लौट जाते हैं। अपने मन के बारे में सोचो। क्या आपके विचार

१कुरी.११:१ जो आपको मार्गदर्शन दे रहा है उसके उदाहरण पर चलो। आप/वह सिद्ध नहीं है। लेकिन आप सीख सकते हैं। जब तक वह मसीह का अनुसण करे तब तक ही उसका अनुसरण करें।

नीतिवचन १०:१७ हमें सुधार के लिये खुला रहना चाहिये। यदि इसके प्रति आपका रवैय्या/स्वभाव गलत है तो आप दूसरों को भी भटका देंगे।

नीतिवचन ११:१४ सलाह मांगो। अनेक सलाह विजय निश्चित करती है। अलग–अलग नज़रिये हमें उन चीज़ों के बारे में सोचने में मदद करती है जिन तर शायद हमने ध्यान न दिया हो। सलाह परमेश्वर का वचन नहीं है, लेकिन यह निश्चित ही सहायता करता है।

नीतिवचन १५:१२ चुनौतियों को संजोकर रखो। जो आपको मार्गदर्शन कर रहा है उसके साथ बात करने में आप पहल करो।

लूका ६:३९–४० अन्तिम परिणाम: आप आपके मार्गदर्शक की तरह बन जाएंगे, उसकी अच्छी बातों को अपने जीवन और अपने चरित्र का एक हिस्सा बनाकर।

स्वयं का मार्गदर्शन

१तीमु.४:७–८ पौलुस ने तीमुथियुस को धार्मिक बनने के लिये "स्वयं को प्रशिक्षण" देने का प्रोत्साहन दिया।

इब्रा.५:११–१४ हमें सीखने में धीमा नहीं होना चाहिये। लगातार उपयोग (आदत) से हम स्वयं को प्रशिक्षित करते हैं। अन्ततः हमारी धार्मिक्ता में हम कैसे हैं इसके ज़िम्मेदार हम खुद हैं। हम दूसरों को दोष नहीं दे सकते।

उपयोग

एकसाथ मिलने का एक निश्चित समय निर्धारित करें।
हरदिन संम्पर्क में रहने का प्रयत्न करते रहें(किसी भी तरह)।
आनन्द उठाने और यादें बनाने में तत्पर रहें।

अध्ययन ७

हृदय

हृदय के बारे में पवित्र शास्त्र कहता है कि संम्पूर्ण मनुष्य –बुद्धी, शरीर और मानसिकता पर काबू रखने का केन्द्र है, हृदय । इस प्रकार एक मनुष्य का हृदय उसे वह बनाता है जो वो है, और उसके हर विचार और क्रियाओं को बढ़ाता है। नए शिष्य को अपने मन की रक्षा करने, उसे संवेदनशील रखने, और परमेश्वर के वचनों के लिये खुला रखने की शिक्षा देना अति आवश्यक है।

परिचय

१शमू.१६:७ परमेश्वर मन को देखते हैं।

हृदय की समस्याएं क्या हैं?

यिर्म.१७:९ धोखा देना: भावनाओं और प्रवृति द्वारा। हमारी भावनाएं और एहसास हमें मूर्ख बना सकती हैं। सच्चाई और इच्छा में हमारे लिये बेहतर क्या है इस फर्क को हृदय शायद न जान पाए।

मरकुस ७:२१–२३ पाप: हृदय पाप और बुरी इच्छा का स्रोत है।

इब्रा.३:१२–१३ कठोरता: मन कठोर, अविश्वासी बन सकता है और परमेश्वर से दूर जा सकता है।

आमोस ६:१–६ आत्मसंतुष्टता: हमारे प्रतिदिन के जीवन में व्यस्त रहकर, हम अपने को सुरक्षित और आत्मविश्वासी महसूस करने लगते हैं। हम सांसारिक जीवन बिताते हैं (व.२–५)। हम औरों के विनाश से दु:खी नहीं होते (व.६), खोए हुए संसार का हमें शोक नहीं।

यहेज. १६:४९–५० सदोम और अमोरा का दोष समलैंगिक सम्बन्ध नहीं था, बरन् वह था उदासीनता! उन्हें किसी बात की चिन्ता न थी। आज कलीसिया इसी भयानक खतरे का सामना कर रही है।

उपाय क्या है?

यिर्म. २९:११–१३ सम्पूर्ण मन से परमेश्वर की खोज करो। यह वचन गैरमसीही और मसीही दोनों के लिये है!

भ.संहिता ५१:१७ धीरजवंत और पिसा हुआ मन विकसित करो, जो तुरन्त परमेश्वर के वचनों के प्रति प्रतिक्रिया करता है।

भ.संहिता ११९:८–११ परमेश्वर के वचन अपने मन में छुपा लो– उन वचनों को याद करो जो आपकी ज़रुरतों के लिये सही हैं।

नी.वचन ३:५–६ सम्पूर्ण मन से परमेश्वर पर विश्वास करो।

१थिस्स. ५:११ एक दूसरे को प्रोत्साहन दो और एक दूसरे की उन्नति का कारण बनो–दूसरे मसीहियों से करीबी सम्पर्क रखो। प्रतिदिन प्रोत्साहन के द्वारा अपने मन को कठोर होने से बचाओ जैसा इब्रा.३:१२–१३ कहता है।

निष्कर्ष

नी.वचन ४:२३ सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर! यह हमारे धार्मिक जीवन का स्त्रोत है। यह हमारे काम, हमारे परिवार, हमारे रुतबे या किसी भी चीज़ से बढ़कर है! निर्णय जो हमारे जीवन के कुछ क्षेत्रों के लिये सही लगें पर हमारे मन की धार्मिकता को नुकसान पहूँचाएं ऐसे निर्णय सावधानी से लें।

बेहतर करें। वह सबसे साधारण और दीन प्रार्थनाओं को भी सुनेंगे।

५.आत्मा के द्वारा गोद लिए हुए – रोमियों ८:१५–१६ यह वचन बताता है कि हमारे भीतर का आत्मा हमें परमेश्वर के गोद लिए हुए बच्चे बनाता है। हमें डरने के लिये दास बनना ज़रुरी नहीं। हम परमेश्वर के बेटे और बेटियां हैं, और हम उसे "पिता" या "अब्बा" कहकर बुला सकते हैं। हमें एक बच्चे जैसी निर्भरता, भरोसा और विश्वास के साथ हमारी प्रार्थना में परमेश्वर के सम्मुख जाना चाहिये।

६.आप आत्मा से भर सकते हो – प्रेरित ४:२४–३१ यहाँ सरकार शिष्यों का सताव कर रही थी। प्रश्न. क्या वे डर गए? (नहीं)। उन्होंने क्या किया? (उन्होंने साहस के लिये प्रार्थना किया!) फिर क्या हुआ? (वचन ३०–३१ कहता है, वह स्थान जहाँ वे प्रार्थना कर रहे थे, हिल गया, और वे सभी आत्मा से परिपूर्ण हो गए और साहस से परमेश्वर का वचन सुनाते रहे!) हमारी प्रार्थनाओं ने हमें निडर और साहसी बनाना चाहिये! आपकी शुरुआत उदास और निराशा से भरी हो सकती है, लेकिन आपकी प्रार्थनाओं से आपमें बदलाव और परमेश्वर की आत्मा भर जानी चाहिये! हमें यह विश्वास करना चाहिये कि परमेश्वर हमें आत्मिक शक्ति से भर सकते हैं!

निष्कर्ष: यह चार उपाय प्रार्थना का उल्लेख करते हैं। अंत में मैं आप सभी को एक साधारण काम सौंपना चाहता हूँ। आनेवाले सप्ताह में, आओ हम सभी आत्मा पर निर्भर होकर एक बढ़िया प्रार्थना और पवित्र शास्त्र अध्ययन का शांत समय रखें!

अध्ययन १६

पवित्र आत्मा को समझना – २
मसीही जीवन

यह अध्ययन बताता है कि एक विजयी मसीही जीवन जीने के लिये हम किस प्रकार पवित्र आत्मा का उपयोग कर सकते हैं। यहाँ चार उपाय हैं।

१. संघर्ष को पहचानो – गलातियों ५:१६–२४। वचन १६–१८ में हम देखते हैं कि हमारा पापमय स्वभाव कुछ और चाहता है और परमेश्वर का आत्मा कुछ और। हमारे हृदय के भीतर एक युद्ध चल रहा है। क्या आपने कभी ऐसा महसूस किया कि आपके हृदय के भीतर युद्ध चल रहा है? क्या कभी ऐसा समय था जहाँ आपको यह निर्णय लेने में संघर्ष करना पड़ा कि क्या पाप से हार मान लें या नहीं (पाप करें या नहीं)? पवित्र जीवन जीने के लिये पहला कदम है, आत्मा और पापमय स्वभाव के बीच चल रहे आत्मिक संघर्ष को **पहचानो**। आओ हम आत्मा को हमारा जीवन जीतने का अवसर दें। वचन १९–२४ हमें बताता है कि, हमारे जीवन में आत्मा की जीत हो रही है या नहीं, यह हम कैसे जान सकते हैं। यदि पापमय स्वभाव की जीत हो रही है तो इसका अर्थ है वचन १९–२१ में लिखे पापों में से कुछ पाप हम कर रहे हैं, और हम नरक में जाएंगे। लेकिन यदि परमेश्वर का आत्मा जीत रहा है, तो हमारा जीवन

धार्मिक ही हो। कुछ लोग अपनी भावनाओं को पवित्र आत्मा समझ बैठते हैं। यह एक बड़ी ग़लती है ।

२. आत्मा में प्रार्थना करो – पवित्र शास्त्र बार–बार हमें "पवित्र आत्मा में प्रार्थना करने" की सलाह देता है (यहूदा:२०)। यह अंक इस बात का अर्थ समझाएगा कि पवित्र आत्मा में प्रार्थना कैसे करना है। आओ हम **इफि.६:१७–१९** में देखें। वचन १८ हमें हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना और बिनती करने को कहता है। प्रार्थना का अर्थ सिर्फ परमेश्वर को एक सूचि देना नहीं है। यह है परमेश्वर से हमारा रिश्ता। यह है परमेश्वर का आत्मा जो हम में है वह स्वर्गीय पिता परमेश्वर से बात करे। क्या वह धार्मिक वीधियां हैं, या जीवित परमेश्वर के साथ एक वैयक्तिक समय? यहां कुछ व्यवहारिक नुस्खे हैं जो आपको, महान, शक्तिशाली, और आत्मिक प्रार्थना करने में आपकी मदद करेंगे। इसमें से एक नुस्खा है वचन १९ में। हमें सदा सतर्क/जागते रहना है। नींद से भरी प्रार्थना मृत प्रार्थना है। दूसरा नुस्खा है वचन १७ में। जब हम प्रार्थना करें तब हमें आत्मा की तलवार – पवित्र शास्त्र – को पकड़े रखना है। पवित्र शास्त्र प्रार्थना के महान उदाहरणों से भरा पड़ा है, जिनसे हम सीख सकते हैं। पवित्र शास्त्र में कई महान प्रार्थनाएं हैं। कुछ उदाहरण : नहे.१:४–१०, १राजा ८, दानिय्येल ९, १इतिहास २९:१०, २शमु.७:१८, भजन संहिता, लूका १:४६,६८। एक काम आप कर सकते हैं, पवित्र शास्त्र के कुछ वचनों के द्वारा प्रार्थना। आओ अभी हम आरंम्भ करें! इफिसियों ६:२१–२४ के द्वारा प्रार्थना करो, हरएक वचन पढ़ो और फिर उस वचन पर प्रार्थना करो। **आत्मा** में **प्रार्थना** करने के कुछ और नुस्खे मैं आपको देना चाहता हूँ।

३.आत्मा से शक्ति – इफि. ३:१६–२१ यहाँ पर पौलुस प्रार्थना करता है कि परमेश्वर अपनी आत्मा का उपयोग कर उन्हें सामर्थ देकर बलवंत करें, ताकि मसीह उनके भीतर वास कर सकें (व.१६–१७)। पौलुस चाहता था कि वे यह जानें कि परमेश्वर उनसे कितना प्रेम करते हैं (व.१८–१९)। यीशु और उसके प्रेम के विषय प्रार्थना आपको परमेश्वर के और करीब आने में मददगार ठहरेंगी। पौलुस चाहता था कि वे यह भी जानें कि हम जितना मांगते या कल्पना करते हैं उससे कहीं **बढ़कर** परमेश्वर हमें देते हैं। अगली बार जब आप प्रार्थना करो तो याद रखो कि **मसीह तुम्हारे भीतर है।** याद रखें कि **परमेश्वर आपसे प्रेम करते हैं।** और यह भी याद रखें कि **परमेश्वर अति शक्तिशाली हैं।**

४.आत्मा पर निर्भर रहो – रोमियों ८:२६–२७ कभी – कभी हम नहीं जानते कि हमें क्या प्रार्थना करना है, लेकिन परमेश्वर का आत्मा हमारी मदद करता है। वह हमारे पक्ष में परमेश्वर से बात करता है कि हमें किस चीज़ की आवश्यक्ता है। मत्ती ६ में यीशु कहते हैं कि, "तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पहले ही जानता है कि तुम्हे क्या चाहिये"। कई बार हम प्रार्थनाओं में विश्वास खो देते हैं क्योंकि हमारे शब्द साधे और बेअसर होते हैं। इससे फर्क़ नहीं पड़ता। परमेश्वर चाहते हैं कि आप और

दूसरे वचन

उत्पत्ति ६:५–६ मनुष्य का मन पापों से भरा था, परमेश्वर का मन हमारे पापों के कारण दु:खों से भरा था।

२इति. १६:९ परमेश्वर की आंखें उस हृदय की खोज में हैं जो पूर्णत: उनके प्रति संकल्पित है।

भ.संहिता ५१:१० दाऊद ने प्रार्थना किया कि परमेश्वर उसे पवित्र मन दें।

नी.वचन १४:१२ हमें लगता है कि हमारा मार्ग सही है परन्तु अंत में वह हमें मृत्यु की ओर ले जाता है।

नी.वचन २८:२६ सिर्फ खुद पर भरोसा रखना मूर्खता है।

यहेज. १८:३१ परमेश्वर चाहते थे कि उन्हे एक नया मन और एक नई आत्मा मिले।

१यूहन्ना ३:१९–२० कभी–कभी हमारा मन हमें दोषी महसूस कराता है, लेकिन परमेश्वर फिर भी हमसे प्रेम करते हैं।

उपयोग

एक पवित्र मन के लिये प्रार्थना करो।

पाप कबूल करो और दीन बनो।

अपने मन को जिन वचनों की आवश्यक्ता है उसे लिखकर याद करो।

अध्ययन ८

अनुशासित धार्मिक जीवन

हम में से कितनों ने यह महान सपना देखा था कि कैसे परमेश्वर हमारा उपयोग करेंगे, वह कैसे हमें उस ढांचे में ढालेंगे जिसमें वे हमें ढालना चाहते थे, लेकिन वह सपने सच नहीं हुए ? जब सफर कठीन और दु:खदायी हो गया, हमने प्रतिरोध किया और यहां तक कि हम परमेश्वर से दूर हो गए। हम में से कुछ स्वभाविक रुप से अनुशासित हैं – यह एक सीखने वाली बात है। इसके बिना हम कैसे सारे भारतवर्ष में सुसमाचार फैलाएंगे? यह अनुशासन ही है जो परमेश्वर चाहते हैं कि हम सब में हो।

परिचय

१कुरी.९:२४–२७ इस प्रकार दौड़ो कि इनाम पाओ (व.२४)। पौलुस ने अपने आप को अनुशासित किया क्योंकि उसके जीवन में उसका एक मकसद था। जैसे हमने पहले अध्ययन में देखा, कि धार्मिक बनने के लिये हमें स्वयं को प्रशिक्षण देना है (१तीमु.४:७–८)।

अंत तक परिश्रमी

इब्रा. ६:९–१२ परमेश्वर न्यायी है। वह हमारे काम और प्रेम को याद रखता है (व.१०)। वह चाहता है कि हम अंत तक परिश्रमी (आलसी नहीं) रहें।

नी.वचन १२:१ अनुशासन के प्रति प्रेम ज्ञान के प्रति प्रेम है। अनुशासन से बैर मूर्खता है।

नी.वचन २४:३०–३४ जीवन में हमारे हाथों से चीज़ें फीसल ना जाएं इसका हमें ध्यान रखना चाहिये – हमारे घर, काम और परिवार का हमें निरंतर ध्यान रखना है।

नी.वचन २६:१३–१६ आलसी हमेशा निडर होने (व.१३), उठने (व.१४), जो शुरु किया है उसे खत्म करने (व.१५), के लिये बहाने बनाता रहता है। वह दूसरों की नहीं सुनता (व.१६)।

वचन पर चलनेवाले

याकूब १:२२–२५ परमेश्वर का वचन व्यवहारिक है। हमें सिर्फ इसे सुनना नहीं है। हमें इसे जीना है।

१थिस्स.४:११–१२ हमारे प्रतिदिन का जीवन आदरात्मक होना चाहिये – हमें हमारे समाजों की, काम के जगहों की और जनसमुदाय के उन्नति का ध्यान रखना चाहिये। हमें पैसों के लिये दूसरों पर निर्भर नहीं होना चाहिये – खासकर कर्ज़ के मामले में सतर्क रहो।

२थिस्स.३:६–१३ पौलुस ने रात दिन काम किया (व.८) ताकि वह उनके लिये आदर्श बने (व.९)। हमें ऐसी जगह काम करना चाहिये जहां समय पर पगार मिले, और उसी पगार में गुज़ारा करना चाहिये – जितना आप कमाते हो उससे कम खर्च करो।

अनुशासन

इब्रा. १२:११–१२ कोई भी ताड़ना उस समय आनन्ददायी नहीं लगती, लेकिन वह एक उत्तम जीवन का फल देती है। एक कीमती जीवन।

२तीमु. २:४–६ कड़ी मेहनत करनेवाला किसान फसल का पहला हिस्सा पाता है।

उपयोग

अपने समय को आप कैसे व्यतीत करेंगे इसकी समयसारणी (टाईम टेबल) बनाओ। कुछ वैयक्तिक लक्ष्य बनाओ।

एक अनुशासित व्यक्ति के साथ समय बिताओ और उनसे सीखो।

किसी को मिलने के लिये समय से पहले निकलने और समय पर मिलने का निर्णय बनाओ जो शायद आप पहले नही करते थे।

१कुरी. २:६–१६ यहाँ पौलुस परमेश्वर के ज्ञान की बात करते हैं (व.७)। आज लोग परमेश्वर के ज्ञान को समझ नहीं पाते हैं। और यीशु के समय भी वे इसे समझ नहीं पाए – उन्होंने परमेश्वर के पुत्र की जान ले ली (व.८)। वचन ९–१० कहता है परमेश्वर ने हमारे लिये जो बनाया है उसे किसी ने, न देखा, न सुना और न समझा है। स्वर्ग इतना सुन्दर और परमेश्वर इतना महान है कि हम उन्हें समझ ही नहीं सकते। फिर भी अपनी आत्मा के द्वारा परमेश्वर ने स्वयं को हम पर प्रकट किया है (व.१०)। पवित्र आत्मा ने पवित्र शास्त्र लिखा और पवित्र आत्मा हममें वास करता है, इसलिये हम समझ सकते हैं कि पवित्र शास्त्र में क्या लिखा है (व.१२)। एक परीवार में, एक दूसरे से बात किए बिना भी लोग एक दूसरे को समझ लेते हैं, क्योंकि एक लम्बे समय से वे एक दूसरे के साथ रहते हैं। प्र. दूसरे व्यक्ति के बोलने से पहले क्या आपने कभी उसकी बात को समझा है? आत्मा के साथ भी यही होता है। परमेश्वर ने हमें मसीह का मन दिया है (व.१६)। ताकि हम पवित्र शास्त्र को समझ सकें। फिर भी हममें से कई पवित्र शास्त्र को बिना समझे ही पढ़ते हैं। वह इसलिये कि हमारे अन्दर की आत्मा को हम काम करने और हमें अंतर्दृष्टि (समझने की शक्ति) देने का अवसर नहीं देते।

मैं तुम्हें कुछ व्यवहारिक सलाह देना चाहता हूँ। प्रतिदिन पवित्र शास्त्र पढ़ने से पहले परमेश्वर से मांगो कि वह आत्मा के द्वारा अंतर्दृष्टि और समझ दे। और पवित्र शास्त्र पढ़ने के लिये निश्चित जोशीले रहो! यदि हम पवित्र शास्त्र नहीं पढ़ेंगे, तो पवित्र आत्मा जो हमारे भीतर रहता है अकेला पड़ जाता है। हमारे भीतर की आत्मा परमेश्वर से नाता जोड़ने के लिये बेचैन रहता है! तो आओ हम प्रतिदिन पवित्र शास्त्र पढ़कर **आत्मा में स्थीर रहें।**

आत्मा की अगुवाई में चलना

पवित्र आत्मा हमारी अगुवाई कैसे करता है?

गलातियों ५:१६–२५ यहाँ पौलुस पापमय स्वभाव और आत्मा के फलों की बात करता है। ध्यान दो व.१८ में पौलुस कहता है, यदि तुम आत्मा के द्वारा जीवन बिताते हो तो व्यवस्था के अधीन नहीं हो। और व.२५ में वह हमें आत्मा के अनुसार चलने को कहता है। हमें अपने आप से यह प्रश्न पूछना चाहिये कि " क्या मैं पवित्र आत्मा के पदचिन्हों पर चल रहा हूँ? क्या मैं वही कर रहा हूँ जो पवित्र आत्मा करता? या मैं वो कर रहा हूँ जो मेरा पापमय स्वभाव मुझसे करवाना चाहता है?" **रोमियों ८:१२–१४** यहाँ हम स्पष्ट रुप से यह देखते हैं कि आत्मा की अगुवाई में चलना अर्थात हमारे प्रतिदिन के जीवन में पाप को मृत्यु देना।

पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचनों के द्वारा हमारी अगुवाई करता है। भ.संहिता १४३:१० यहाँ लेखक परमेश्वर से माँगता है कि परमेश्वर उसे परमेश्वर की आज्ञा मानना सिखाएं। वह माँगता है कि परमेश्वर का आत्मा उसे धर्म के मार्ग में अगुवाई करे। जब हम आत्मा की अगुवाई में चलते हैं, तब हम धार्मिकता के मार्ग पर हैं, पाप के नहीं। भावनाओं पर चलना हमें भटका सकता है: **यिर्म:१७:९** यहाँ हम देखते हैं कि मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोका देनेवाला होता है। जो मार्ग हमें धार्मिक लगता है ज़रुरी नहीं

५. खोए हुओं के प्रति दृढ़संकल्प – लूका १८:९–१४। फरीसी धार्मिक था। वह प्रार्थना करता, उपवास करता, अपनी कमाई का १०% परमेश्वर को देता। लेकिन अपने पर उसे बहूत घमण्ड था। उसने अपने लिये परमेश्वर की आवश्यक्ता नहीं समझा। लेकिन दूसरी ओर चुंगी लेनेवाला यह जानता था कि वह खोया हुआ है। उसे पता था कि उसे मदद की ज़रुरत है। हमें अपने खोए हुए स्थीति का एहसास रखना चाहिये। इसका आरंम्भ हमी से होता है। हमें यह याद रखना चाहिये कि कभी हम खोए हुए थे और यीशु ने हमें ख़ोज निकाला। हम हमारे, " अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे" (इफि.२:१)। हम मसीह से अलग और खोए हुए थे (इफि.२:१२)।

२पत. १:५–९ हमें हमारे जीवन के अनेक क्षेत्रों में बढ़ना है। यदि हम नही बढ़ रहे, याने हमारे उद्धार के आभार को हम खो चुके हैं (९)। हमें यह भी याद रखना चाहिये कि संसार खोया हुआ है। इसीलिये यीशु आए। लोगों को यीशु की आवश्यक्ता है।

चुनौती:

आज हमने देखा कि कैसे यीशु एक दृढ़संकल्प वाले व्यक्ति हैं। मसीही होने का अर्थ सिर्फ सभाओं में आना या स्वयं को मसीही कहलाना नहीं है। यह है एक ऐसा व्यक्ति बनना जो सचमुच में किसी बात पर विश्वास करता हो। यह है हमारे युग के लोगों को बचाने के परमेश्वर के काम का हिस्सा बनना। क्या आप एक दृढ़संकल्पित व्यक्ति हैं? इस सप्ताह, कुछ ऐसा करें जिससे आपके संकल्प की परीक्षा हो सके। आपके परीवार का कोई व्यक्ति या आपका काई मित्र आपका विरोध कर रहा हो तो उसके साम्हने नम्रता लेकिन दृढ़ता से डंटे रहो। जिनको बोलने से आपको डर लगता हो ऐसे लोगों को आमंत्रण दो। अपने कुछ पाप या बुरी आदत सदा के लिये छोड़ दो।

दृढ़संकल्प से कुछ करो।

अध्ययन १५

पवित्र आत्मा को समझना – १

प्रार्थना समय

एक मसीही होने के नाते, हम सभी में पवित्र आत्मा वास करता है। और फिर भी हममें से कई समझ नहीं पाते कि पवित्र आत्मा क्या है और कैसे वह हमारी मदद कर सकता है। आज हम इस विषय पर ३–भागों की श्रृंखला का आरंम्भ करेंगे ताकि परमेश्वर के इस महान वरदान को समझने में आपकी मदद हो सके। नियमित अध्ययनों में पवित्र आत्मा के अध्ययन का यह विस्तारण है।

१) पवित्र आत्मा में स्थीर रहो – २पत.१:१९–२१। इस वचन के अनुसार, पवित्र शास्त्र पवित्र आत्मा से प्रेरणा पाकर लिखा गया है। मनुष्यों ने इसे लिखा, लेकिन परमेश्वर की आत्मा से प्रेरित होकर।

अध्ययन ९

प्रचार, निडरता और युक्ति

जब प्रचार की बात आती है, तो एक नए मसीह में निडरता और युक्ति ये दोनों हि बातें कम ही दिखाई पड़ती हैं। लोग साधारणत: किसी एक ही बात में अधिक मज़बूत होते हैं: वे इतने युक्तिवूर्ण होते हैं कि कम ही बोलते हैं, अगर बोलें तो; या फिर वे इतने निडर होते हैं कि उनकी असंवेदनशीलता के कारण कोई भी उनकी नहीं सुनता। प्रार्थना के द्वारा निडरता आती है; और युक्ति संवेदनशील लोगों का निरीक्षण करने से आती है। डर हमें निडरता में और हमारी युक्ति में बढ़ने से रोकता है, "पर्वत पर बने शहर" और "पृथ्वी का नमक" जो यीशु की इच्छा है,बनने से रोकता है।

प्रचार

२कुरी. ५:१०–२१ क्योंकि हम परमेश्वर को जानते और उसका भय मानते हैं, हम दूसरों को मनाने का प्रयत्न करते हैं। यीशु के प्रेम से हमारा मन भर आता है (व.१४–१५), हम नई सृष्टि हैं। हम मसीह के दूत हैं और परमेश्वर ने हमें मेल–मिलाप का सेवाकार्य दिया है। प्रचार एक चुनाव नहीं है – परमेश्वर की ओर से यह हमारा उद्देश्य है।

फिले.:६ परमेश्वर के बारे में हमारी समझ और परख तब बढ़ेगी जब हम अपना विश्वास बांटने में कार्यशील रहें !

प्रेरित ८:१–४ पहले शताब्दि के शिष्य – जो सताव के कारण तितर–बितर हो गए थे – प्रचार करने में मग्न थे।

लूका १०:१–२ यीशु ने दो – दो करके उन्हें भेजा – वे समझ गए थे कि जब हम मिलकर प्रचार करते हैं, तो चलते चलते हम एक दूसरे को प्रोत्साहन दे सकते हैं। यह हमारे लिये भी एक अच्छा उदाहरण है।

निडरता

रोमियों १:१६–१७ सुसमाचार से शर्म करने जैसी कोई भी बात नहीं है क्योंकि इसमें मनुष्यों को बचाने की शक्ति है।

लूका ९:२३–२६ यदि हम यीशु और उसके वचनों से लजाएंगे, तो वह भी हमसे लजाएगा।

प्रेरित ४:२९–३१ यह शिष्य भारी सताव में थे। उन्होंने सताव खत्म होने की प्रार्थना नहीं की। उन्होंने यह प्रार्थना की, कि वे निडर बनें, और परमेश्वर ने उनकी प्रार्थना का उत्तर दिया। हमें प्रार्थना करना चाहिये !

युक्ति

मत्ती १०:१६ यीशु ने अपने शिष्यों को सिखाया कि वे सिधे सरल रहें पर साथ ही चतुर भी हों।

नकारात्मक बातें – इनसे बचो:

नी.वचन १२:१८ बिना सोच विचार के बोलना – यह तलवार की नाई चुभता है।

नी.वचन २५:१७ अपने पड़ोसी के घर में कभी कभी जाया करो – बार बार जाने से लोग आपसे कतराने लगते हैं।

नी.वचन २७:१४ एक सही काम (आशिष देना) यदि गलत समय पर किया जाए तो गलत लगता है। बहूत अधिक आक्रमक न बनो; लोगों के समय (दिनभर के काम) के प्रति संवेदनशील रहो। कुछ लोग जो बी.पी.ओ. में काम करते हैं वे दिन में सोते हैं, जब आप उनसे मिलने/फॉलोअप करने जाएं तो उन्हे मत जगाओ !

मत्ती ७:६ सुअर के आगे मोती मत फेंको – एक सुअर मोती की कीमत नहीं जानता। जो लोग रुचि न ले रहे हों उनपर अपना समय बरबाद न करें।

२तीमु. २:२३–२६ विवाद से बचो। धार्मिक लोग विवाद करना पसंद करते हैं।

सकारात्मक (सही) बातें – इन्हे अपनाओ:

१कुरी. ९:२०–२३ पौलुस अपने सुननेवालों से जुड़ना चाहता था कि उनमें से अधिक से अधिक को जीत सके। जो बात आप में समान है उसपर ज़ोर दो।

तीतुस २:१० सुसमाचार को आकर्षक बनाओ।

१पतरस ३:१५–१६ जब आप उनके प्रश्नों या संन्देहों का उतर दो तो नम्रता और आदर के साथ दो।

उपयोग

दूसरों से अपना विश्वास बांटने का स्वयं के लिये एक उद्देश्य रखो, और उसे निभाओ। अपने जीवन के किसी एक क्षेत्र में सुधार लाने का प्रयास करो जिसके द्वारा आप सुसमाचार को अधिक आकर्षक बना सको। किसी के साथ मिलकर प्रचार करो।

अध्ययन १०

सेवा की आत्मा

जब यीशु इस धरती पर आए, तो एक सेवक के रुप में आए (मरकुस १०:४५)। वह आज भी एक सेवक हैं, क्योंकि वे हमेशा हमारे लिये बिनती करने के लिये जीवित हैं (इब्रा.७:२५)। जैसे हम उनके "पदचिन्हों" पर चलते हैं(१पतर. २:२१) तो हमें भी सेवक ही बनना है।

मत्ती २०:२६–२८ यीशु ने अपने शिष्यों को सिखाया कि संसार के बिलकुल विपरीत, परमेश्वर के राज्य में ऊपर उठने का मार्ग सेवा का मार्ग है। यीशु सेवा करने आए, सेवा लेने नहीं।

फिलि. २:३–८ स्वार्थ हित और झूठी प्रशंसा के लिये हमें कुछ नहीं करना चाहिये – इसके बजाए दूसरों को हमसे बहतर जानो, और पहले उनकी ज़रुरतों का ध्यान

जब हम यीशु के पीच्छे चलना शुरु करें तो हमारा परीवार भी शायद हमारे बारे में ऐसा ही सोचें। जब ऐसा हो तो हमें जान लेना चाहिये कि कुछ अद्भुत नहीं हो रहा है। यीशु के शिक्षण से परीवार में मतभेद/विभाजन साधारण बात है।

मरकुस ३:३१–३५ वे यीशु को घर ले जाने आए। यीशु उनके साथ नहीं गए – उनका दृढ़संकल्प था कि उनके भाई बहिन उनका परीवार है। हमारे परीवार को यह समझ लेना चाहिये कि यद्यपी हम उनसे प्रेम करते और उनका आदर करते हैं, लेकिन हमारे जीवन में यीशु का स्थान पहला है, और उसका यह भी अर्थ होता है कि उनके चेलों (कलीसिया) के साथ रहने की प्राथमिकता कभी–कभार पारीवारिक बातों को दूसरा स्थान देगी।

मत्ती १०:३४–३९ यीशु यह जानते थे कि उनके विषय में अलग–अलग विचार परीवारों को बांट देंगे। अन्ततः सच्ची एकता प्रेम से आती है न कि दूसरों को जबरदस्ती हमारे विश्वास को अपनाकर उनपर चलाने से। आपके परीवार को आपके विश्वास को समझने में शायद समय लगे। कई शिष्यों को अनेक वर्षों तक इंतज़ार करना पड़ा कि जब उनके परीवार उनके विश्वास की शक्ति को सही में समझ पाएं। अक्सर यूं होता है कि आपका परीवार और परीवार के दूसरे नातेदार यही चाहते हैं कि आपके जीवन में जो महान फर्क़ यीशु लाते हैं उससे पहले आपकी शादी हो जाए और बच्चे हो जाएं।

३. समालोचना के प्रति दृढ़संकल्प – मरकुस ५:२१–२४। यीशु याईर की बीमार बेटी को चंगा करने निकलते ही हैं। लेकिन तभी रक्तस्त्राव से पीड़ित एक स्त्री उनका रास्ता रोक लेती है जिसकी यीशु मदद करते हैं (व.२५–३४)।

मरकुस ५:३४–४३ वचन ३५ में लोगों ने याईर से कहा, "आपकी बेटी मर गई। अब गुरु को कष्ट मत दीजिए।" इसके प्रति यीशु की प्रतिक्रिया अचंभित करनेवाली है– उसने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। हालांकि वचन ४० में लोग यीशु पर हंसे फिर भी यीशु ने लड़की को चंगा किया। लोग क्या कहते हैं इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। फर्क इस बात से पड़ता है कि परमेश्वर हमारे बारे में क्या सोचते हैं।

४. पाप के प्रति दृढ़संकल्प – मरकुस ११:११,१५–१८। यहां यीशु मन्दिर में गए (व.११) और चारों ओर देखा। वहां उन्होंने देखा कि मन्दिर में बाज़ार सजा था। लोग बली के लिये कबूतर, भेड़–बकरी इत्यादि बेच रहे थे। यीशु को यह ठीक नहीं लगा। उन्होंने एक चाबुक बनाया और सबको बाहर भगा दिया ! पाप के प्रति यीशु दृढ़संकल्पित थे। मरकुस ७:२०–२३ बताता है कि कैसे अनेक पाप मनुष्य के अपने हृदय से निकलते हैं। अक्सर हम दूसरों के पापों के प्रति दृढ़ संकल्प रखते हैं, लेकिन अपने और अपने करीबी मित्रों के पापों के प्रति हम नरम स्वभाव अपनाते हैं।

दूसरों से अपने बच्चों के विषय में जानकारी लो ; कलीसिया के अगुवे जो आपके बच्चों की मदद करत हैं उन्हें गुप्त रुप से हानी न पहूँचाओ।

बच्चों को अच्छा काम करने पर मजूरी और ईनाम देने की पद्धती बनाओ।

उनके साथ मिलकर बाहर जाओ और प्रचार करो।

अध्ययन १४

यीशु एक दृढ़संकल्पी व्यक्ति

वह कौन से ऐसे कुछ अतिशक्तिशाली और प्रगतिशील पुरुष हैं जो कभी इस पृथ्वी पर रहे ? पुरुष जैसे कैसर, हिटलर, गांन्धि, र्चचहिल और दूसरे। यीशु ऐसे व्यक्ति थे जिनमें कई अच्छे गुण थे : तरस, दया, गरीबों की चिन्ता, दूरदृष्टि, पवित्रता, प्रार्थना, ईश्वर के लिये प्रेम। पर शायद उनका सबसे प्रबल गुण था संकल्प। वे सचमुच में अपने कार्य और अपने पिता में विश्वास रखते थे। यीशु को इस बात की चिन्ता बिलकुल नहीं थी कि लोग उनके बारे में क्या सोचते हैं, क्योंकि वे जानते थे कि "एक मनुष्य में क्या है" (यूहन्ना २:२५)। जैसा गला.१:१० में पौलुस ने लिखा "यदि मैं अब तक मनुष्यों को ही प्रसन्न करता रहता तो मसीह का सेवक न होता"।

१. अपने कार्य के प्रति दृढ़संकल्पता – मरकुस १:३५–३९। सूरज निकलने से बहूत पहले सुबह–सुबह यीशु ने अकेले प्रार्थना की (व.३५)। कुछ एकांत मिले और गहराई से प्रार्थना कर सकें इसलिये यीशु ने ऐसा किया। जब भाईयों ने उसे ढूंढा और मिलने पर कहा, " सब लोग आपको ढूंढ रहे हैं।" (व.३७)। वचन ३८ में यीशु की प्रतिक्रिया अचंभित करनेवाली थी, "आओ हम आस–पास की बस्तियों में जाएं ताकि मैं वहां भी प्रचार करुं ; क्योंकि मैं इसीलिये आया हूँ।" ***वे चाहते थे कि सारा संसार परमेश्वर को जानें और उनके सेवाकार्य के द्वारा उद्धार पाएं।*** मरकुस १:१४–२० में हमें यीशु के पीच्छे चलने को बुलाया गया और १पत.२:२१ में – उनके पदचिन्हों पर चलने के लिये। हमारा कार्य भी वही है जो उनका था। जबकि सभी लोग चाहते हैं कि हम कुछ और कार्य करें, हमारे कार्य के प्रति हमें दृढ़संकल्पित रहना चाहिये।

२. परीवार के प्रति दृढ़संकल्प – मरकुस ३:२०–२१। यीशु के खुद के परीवार के लोग यह समझते थे कि यीशु पागल हैं। वे उनपर काबू पाना चाहते थे। शु के शिक्षण से परीवार में मतभेद/विभाजन साधारण बात है।

रखो (व.३–४)। यीशु की दीनता और सेवा का स्वभाव हमारे लिये एक आदर्श है (व.५)।

लूका १७:७–१० जब हमने सेवा किया, तो हमारा स्वभाव यह होना चाहिये कि हमने सिर्फ अपना कर्तव्य निभाया। हमें "धन्यवाद" पाने के लिये नहीं रुकना चाहिये – कभी कभार हम पर कोई ध्यान नहीं देगा! परंतु परमेश्वर ने देखा है।

फिलि. २:१४–१६ हमें सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद के करना चाहिये।

कुलु.३:२३–२४ जब हम सेवा करें, जहां भी हम सेवा करें, यह हमारे पूरे मन से करें। हम मसीह की सेवा कर रहे हैं।

दूसरे वचन

नी.वचन ३:२७:२८ यदि आपके बस में हो तो किसी का भला करने से पीच्छे न हटो। आज कुछ भला काम करो !

यूहन्ना १३:१–१७ यीशु परमेश्वर में सुरक्षित थे। वह जानते थे कि वे कौन हैं और परमेश्वर कौन हैं (व.३), इसलिये सेवा उनके लिये अपमान न था। वे छोटा से छोटा काम करने में भी अव्वल थे (पाँव धोना)। यह उनके शिष्यों के लिये – और हमारे लिये एक उदाहरण है (व.१७)।

इफि. ६:७–८ अपने पूरे मन से सेवा करो, यीशु हमारे हर काम का फल हमें देंगे।

फिलि. ४:४–५ हमारा आनंद और कोमलता सबको दिखाई देना चाहिये – प्रभू हमारे करीब हैं !

गलातियों ६:१–२ हमें एक दूसरे की धार्मिकता का बोझ उठाना चाहिये – पर सतर्क भी रहना है कि हम पाप या घमण्ड में ना गिरें।

गलातियों ६:१० जब भी मौका मिले हमें सभी के लिये भलाई का काम करना चाहिये, खासकर मसीहियों के लिये।

गलातियों २:१० गरीबों को याद करने में हमें तत्पर रहना चाहिये।

उपयोग:

बिना कहे सेवा करना सीखो। ज़रुरतों पर ध्यान दो –
परिचायक्ता (अशरिंग), के.के.सी., गायन, बच्चों की देखभाल।

जब किसी खास रुप में मदद करने को कहा जाए, तब ज़िम्मेदार रहो – वादा निभाओ, समय पर उपस्थित रहो, बढ़िया काम करो।

होप फाऊंडेशन, गरीबों की मदद करने के लिये कलीसिया की एक गैरसरकारी संस्था है। होप के किसी कर्मचारी से बात कर अपने किसी शिष्य मित्र के साथ अपने शहर में गरीबों की मदद करने में हाथ बंटाएं।

अध्ययन ११

कुँआरा मसीही जीवन

संम्पूर्ण पवित्रता

१तीमु. ५:१–२ भाईयों जवान स्त्रियों से बहिनों सा बर्ताव करें, "पूरी पवित्रता" के साथ।

उत्पत्ति ३९:६–१२ यूसुफ एक सुंन्दर पुरुष था। उसके मालिक की पत्नी उससे शारीरिक संम्बन्ध बनाना चाहती थी, वह कुँआरा था पर इसके बावज़ूद उसके कुछ दृढ़ संकल्प थे। यूसुफ की प्रतिक्रिया कैसी थी? **वह भाग गया**। याद रखने की बातें:

- ☛ कभी भी किसी स्त्री/पुरुष के साथ अकेले न रहो।
- ☛ पापी विचारों से दूर रहो।
- ☛ जानो, वासना और व्यभीचार स्वयं परमेश्वर के विरुद्ध पाप है।

इफि. ६:१०–१८ हम पवित्रता की लड़ाई जीत सकते हैं यदि हम उद्धार का टोप पहनें और आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन है, का उपयोग करें। पवित्रता की लड़ाई शैतान के विरुद्ध एक आत्मिक लड़ाई है। **यह आरंभ होता है हमारे मज़बूत प्रार्थना समय के साथ।**

१यूहन्ना १:८–१० एक सिर्फ एक खुलापन कितना महत्वपूर्ण है। शैतान हमसे यह कहकर झूठ बोलता है कि यदि हम पाप कबूल करेंगे तो वो हमें नीची नज़र से देखेंगे, तुम्हे स्वीकारा/अपनाया नहीं जाएगा। लेकिन परमेश्वर हमसे पाप कबूली, खुलापन और पाप और दोष से मुक्त रहने की अपेक्षा रखते हैं। क्या ऐसा कुछ है जो आप कबूल करना चाहते हैं?

नी.वचन २८:१३–१४ छुपे हुए पाप हमारे मसीही जीवन के आत्मिक उन्नति में बाधा डालते हैं।

भ.संहिता ३२:३–५ यदि हम हमारे पापों को छुपाकर रखें तो हम मसीह के लिये जोशीले और आनन्दित नहीं रह सकते। यह सिर्फ हमारी शक्ति को धीरे – धीरे कमज़ोर कर देता है।

संम्पूर्ण लवलीनता

१कुरी.७:२९–३५ हमें यह याद रखना चाहिये कि पौलुसऔर यीशु दोनों ही कुँआरे थे और उन्होंने एक अतुल्य प्रभाव डाला। यीशु ने सिखाया कि कुछ लोगों को कुँआरे रह पाने का और " स्वर्ग के राज्य के लिये नपुंसक" बनने का वरदान मिलता है(मत्ती १९:१२)। एक कुँआरा संम्पूर्ण रुप से परमेश्वर के प्रति लवलीन रह सकता है (व.३२), जबकि विवाहित व्यक्ति दूसरे कामों के प्रति वचनबद्ध होता है जो उसका ध्यान बंटा सकती हैं। एक अधर्मी जीवनसाथी से विवाह के जाल में फंसने से कहीं बेहतर है एक जोशीला कूँआरा रहना।

कमाएं और "परीवार की ज़रुरतें पूरी करें।" अतीरिक्त पैसों से खरीदे चीज़ों से कहीं बढ़कर उन्हें हमारी और हमारे समय की ज़रुरत है।

कुलु. ३:२१ अपने बच्चों को तंग मत करो – उन्हें प्रोत्साहन की आवश्यक्ता है निराशा की नहीं। ज़रुरत से ज्यादा सुधार/ताड़ना सचमुच में लोगों को निराश कर सकती है।

अनुशासन / ताड़ना

नी.वचन २३:१३–१४ यह प्रेम में किया जानेवाला कार्य है।

नी.वचन २२:१५ यह परमेश्वर की आज्ञा है। यह बच्चे के मन से मूर्खता को निकाल देता है।

नी.वचन २९ वचन १५, १७, १९ और २१ में हम देखते हैं कि परमेश्वर ताड़ना पर ज़ोर डालते हुए बार–बार दोहराते हैं। ज़्यादा लाड़ प्यार किसी काम का नहीं (व.२१)। सिर्फ बातों से काम नहीं बनता (व.१९)। कठोर अनुशासन बच्चे को बुद्धिमान बनाता है, और माता पिता को चैन और आनन्द मिलता है (व.१५,१७)।

नी.वचन १३:१ बुद्धिमान पुत्र पिता की शिक्षा/ताड़ना सुनता है। बच्चों को ताड़ना/अनुशासन देने में पिता को आगे रहना चाहिये। पति पत्नि को चाहिये कि वे अकेले में बैठकर आपस में सहमती से बातें करें कि बच्चों के लिये अनुशासन का क्या स्तर होगा और न मानने पर क्या सज़ा होगी ताकि बच्चे उनमें मतभेद ना पैदा कर सकें और ना उनपर हावी हों ! बच्चों को कैसे अनुशासित करना है इस विषय पर कभी भी बच्चों के साम्हने वाद–विवाद न करें – एकता में रहें।

प्रशिक्षण

नी.वचन २२:६ बच्चों को सही समय पर शिक्षा दो और बूढ़े होने पर भी वो उस मार्ग से नहीं हटंगे।

✻आदर ✻ बोली ✻ मिलनसार/दया ✻ स्वच्छता ✻ शिष्टाचार ✻ भाव (मूड़)

उपयोग

प्रत्येक बच्चे के साथ साप्ताहिक मार्गदर्शन समय रखें ताकि उन्हें शिक्षा दे सकें और संम्बन्ध मज़बूत बनें।

उन्हें प्रतिदिन प्रार्थना समय रखने में मदद करें; उनके साथ सुबह में और/या फिर रात को सोने से पहले प्रार्थना करें।

कलीसिया के प्रति ज़िम्मेदारी – समय से पहले पहूँचो, सेवा, पवित्र शास्त्र और पुस्तक (नोटबुक) साथ लाओ।

संगती के प्रति वचनबद्धता – अतिथि–सत्कार। कलीसिया में होनेवाले बप्तीस्मा और सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लो।

पारीवारिक उपासना बड़े बच्चों के लिये सप्ताह में एक बार और छोटे बच्चों के लिये प्राय: प्रतिदिन।

उपयोग

प्रतिदिन एकसाथ प्रार्थना करें।
एकसाथ प्रचार करें – अतिथि–सत्कार के साथ।
कभी कभार प्रार्थना समय/शांत समय एकसाथ बांटो।
अकेले में एकसाथ बात करने के लिये नियमित समय बिताएं।
श्रेष्ठगीत पढ़ो।
दूसरे जोड़ों के साथ नियमित मार्गदर्शन समय बिताएं।

अध्ययन १३

मसीही माता पिता का अपने बच्चों को मार्गदर्शन

परिवार वही है जहाँ मसीही सिद्धान्त कुछ समय के अन्तराल के साथ अदभुत फल लाते हैं। यह संसार के लिये एक ज्योति है – यह हमारे परिवारों के लिये एक ज्योति है जिन्होंने शायद आरंम्भ में हमारे विश्वास पर संदेह किया था। वह परिवार जो परमेश्वर के वचनों पर चलता है वह खुश, बातचीत करनेवाला, मिलनसार, प्यार करनेवाला, दृढ़संकल्पी और फलदायी परिवार होता है।

धार्मिक लक्ष्य

इफि. ६:१–४ यीशु अपेक्षा करते हैं कि बच्चे और माता पिता "प्रभू में बने रहें"।
व्यव. वि. ४:९ आपने जो बातें मसीह में अनुभव की हैं वो बातें अपने बच्चों और पोतों को सिखाओ।
व्यव. वि. ६:१–७ नियम में यह अपेक्षा थी कि वे अपने पूरे मन से परमेश्वर से प्रेम करें, और , "अपनी संतान को समझाकर सिखाया करना" (व.७)। उन्हें घर पर, रात में, दिन में, और रास्तों पर इसकी चर्चा करनी थी ! व्यवहारिक रुप में इसका अर्थ यह होता है कि पवित्र शास्त्र हमारे पारीवारिक जीवन का एक हिस्सा होना चाहिये। नीयमित पारीवारिक उपासना/डिवोशन, बच्चों के साथ प्रार्थना समय, कठिनाईयों के बारे में प्रार्थना, वचनों को याद करना, यह सब हमारे परीवार की सामान्य बातें होनी चाहिये।

बच्चों की देखभाल

होशे ११:१–४ बच्चों को प्यार की ज़रुरत होती है। परमेश्वर ऐसा पिता नहीं था जो अपने बच्चे के साथ न रहे – उसने एप्रैम को चलना सिखाया (व.३)। उसने अपने बच्चों की अगुवाई "मानवी दया की डोरी" से की (व.४) – पिता होने के नाते हमें अपने बच्चों से कठोरता का बर्ताव नहीं करना चाहिये (इफि. ६:४)। हमारे घरों में भरपूर स्नेह होना चाहिये।
नी.वचन १५:१७ प्रेम से सागपात का भोजन, बैर से बैल का मांस खाने से अच्छा है। कई पिताओं का यह मानना है कि हमारे बच्चे चाहते हैं कि हम पैसा

विवाह के लिये परमेश्वर की योजना

उत्पति २:१८,२४ परमेश्वर ने कहा, "आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं" सो उसने उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाया जो उससे "मेल" खाए।
परमेश्वर ने स्त्री पुरुष को एक दूसरे की ज़रुरतों का पूरक बनाया है। उन्हें अपने माता पिता को छोड़कर अलग एकसाथ रहना चाहिये। इस संसार में कई विवाह नष्ट हो जाते हैं क्योंकि पती या पत्नी अपने माता पिता को कभी भी छोड़ना नहीं चाहते। फिर माता पिता पुत्र की पत्नी (या बेटी के पती) को कुछ इस तरह बदलना चाहते हैं कि इससे सभी नाराज़ हो जाते हैं। जब शिष्य विवाह के बंन्धन में बंधते हैं तो वे दानों अपने माता पिता को छोड़कर एक नया जीवन आरंम्भ करते हैं।
नी.वचन १८:२२ यदि हम विवाह कर लें तो हम कुछ उत्तम पाते हैं और परमेश्वर से आशिष भी पाते हैं।
एज्रा १०:१–२ पुनर्जीवन के समय इस्त्राएलियों ने यह जाना कि परमेश्वर के लोगों को छोड़ अन्य जाति के लोगों से विवाह कर उन्होंने परमेश्वर से विश्वासघात किया है।
नहे. १३:२३–२७ नहेम्याह का यह दृढ़संकल्प था कि हमें विश्वासियों में ही विवाह करना चाहिये (व.२५)। उसने यह लिखा है कि इस मामले में इस्त्राएल के राजा सुलैमान ने पाप किया है (व.२६)।
१कुरी. ७:३९ जब एक मसीही पत्नी का पति मर जाए तो वह दूसरा विवाह कर सकती है – लेकिन वह पुरुष प्रभू में होना चाहिये।
२कुरी. ६:१४–१८ पवित्र शास्त्र अविश्वासियों के साथ जुए में जुतने या "गलत संगी" बनाने के बारे में चेतावनी देता है। एक जुआ दो बैलों को एक साथ बांधता है। विवाह की वचनबद्धता हम दोनों को जीवन भर के लिये एकसाथ बांध देती है। यदि हममें से एक पूरी तरह से वचनबद्ध शिष्य है, जिसका सपना है त्याग और परमेश्वर के राज्य की उन्नति, जो पवित्र शास्त्र पर आधारित जीवन जीना चाहता है, मार्गदर्शन पाना, और संसार को बदलना, और जबकि दूसरे के सपने कुछ और ही हैं , तो विवाह नाश के कठिनाईयों में डूब जाता है। यदि कोई "विश्वासी" है जो प्रतिदिन पवित्र शास्त्र पर नहीं चलता तब भी यह हो सकता है। एक शिष्य का रहन सहन ऐसा है जो उसके साथ रहनेवाले पर जो उसकी तरह पवित्र जीवन, त्याग, खुले रिश्ते, शिष्यता और प्रचार इत्यादी सब बातों पर नहीं चलता, गहरा दबाव डालता है। हमें परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिये कि वह हमें विवाह के लिये सही साथी ज़रुर देगा। यदि नहीं तो हम कुँआरे रहकर यीशु और पौलुस के उदाहरण पर चलेंगे।
मत्ती १९:९ विवाह जीवनभर के लिये होता है।
नी.वचन १५:२२ इस क्षेत्र में सलाह लेना बहूत महत्वपूर्ण है।

अध्ययन १२

विवाहित मसीही जीवन

जीवन के हर क्षेत्र में धार्मिक और सार्थक जीवन जीने के लिये हमें जिन बातों की आवश्यक्ता पड़ती है उन सभी बातों की पूर्ती परमेश्वर का वचन और उसकी शक्ति, करता है (२तीमु.३:१७, २पत.१:३, यूहन्ना १०:१०)। विवाह का क्षेत्र एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ यीशु एक महान फर्क ला सकते हैं। हमारे वैवाहिक रिश्ते मार्गदर्शन के लिये एक परमावश्यक क्षेत्र है, विशेषत: इसलिये कि हमारे समाज के रीति रिवाज़ अधिकतर पवित्र शास्त्र पर आधारित नहीं होते। एक धार्मिक, प्रेम से भरा और आदरपूर्ण मसीही विवाह, वह ज्योति है जो संसार और खोए हुओं को यीशु के पास खींच लाती है।

भरपूर बातचीत

पतियों और पत्नियों को एकसाथ समय बिताने की ज़रुरत है। इस समय का उपयोग एक दूसरे को प्रभू में मज़बूत बनाने के लिये करना चाहिये।

मूल सिद्धान्त:

इफि. ४:२९–३२ सकारात्मक, उन्नतिपूर्ण बातें। बकबक या पीठ पीछे बातें नहीं (१तीमु. ५:१३)।

याकूब १:१९–२१ दानों को एक दूसरे का सुनना और क्रोध में धीमा होना चाहिये। इसके लिये एकसाथ समय बिताना आवश्यक है! व्यवहारिक चीज़ों के बारे में बात कर यह निश्चित करो कि दोनों ही समय, पैसे की बातों और रिश्तेदारों को मिलने इत्यादि बातों में एकमत रहो।

कुलु ३:१३ हम सभी को बहूत क्षमा मिली है। क्रोध को पनपने न दो।

आत्मिक गती: पतियों के धार्मिक अगुवाई में रिश्ते पनपने चाहिये। पत्नियों को पति के अधिन रहना चाहिये।

इफि. ५:२२–३३ पत्नियों को अधिन रहने को कहा गया है (व.२२–२४)। पतियों को त्यागपूर्ण भाव से प्रेम करने को कहा है (व.२५–२९)। पति का उद्देश्य है कि पत्नि को तेजस्वी, आनन्दी, मसीह में दमकती रहने में उसकी मदद करे (व.२७)। यह वह तभी कर सकता है जब वह उससे सच्चा प्रेम करे (कठोरता से नहीं – कुलु. ३:१९)।

१पत. ३:७ पति को पत्नि का पूरा ध्यान रखना चाहिये। घर के कामों में मदद करना भी इसमें शामिल है!

नी.वचन २१:१९ पत्नि को चिढ़चिढ़े स्वभाववाली नहीं होना चाहिये (नी.वचन २५:२४,२७:१५ भी पढ़ें) बल्कि आदर से बात करना चाहिये।

बाहरी बातों पर ध्यान

अतिथी–सत्कार हमें कई प्रकार से मदद करता है। परमेश्वर का मकसद यह नहीं है कि विवाहित जोड़ा सिर्फ स्वयं को खुश करनेवाला और खुद का ध्यान रखनेवाला एक दल बने, बरन् इस खोए हुए संसार में उसका औज़ार बनें।

इब्रा. १३:१–२ जब हम अतिथी–सत्कार करते हैं तो हम मनोरंजन के दूत बन जाते हैं।

१पत. ४:९ अतिथि–सत्कार पवित्र शास्त्र की एक आज्ञा है! दूसरों को देना हमें छोटे – छोटे मतभेदों पर काबू पाने में प्रेरित करता है। हमें विवाहितों, कुँआरों और खोए हुओं को आमंत्रित करना चाहिये। एकसाथ मिलकर लोगों की सेवा करना एक अद्‌भुत अनुभव है।

धार्मिकता:

सभो.४:९–१२ "जो डोरी तीन धागों से बटी हो वह जल्दी नहीं टूटती"(व.१२)। हमें एक दूसरे की आवश्यक्ता है। हम एक दूसरे को ग़र्म रखते हैं। गिरने पर हम एक दूसरे को उठाते हैं। तीसरा धागा यीशु हैं – विवाहितों के लिये एक बढ़िया आदत है प्रतिदिन साथ–साथ प्रार्थना करना।

कुलु. ३:१६ हमें एक दूसरे से धार्मिकता से बात करना चाहिये।

इफि. ४:१५ हमें एक दूसरे के प्रेम में आदर के साथ सच बोलना चाहिये।

प्रेरित ५:१–११ हमें पाप में एक दूसरे का संरक्षण नहीं करना चाहिये, वरन् ईमानदार होना चाहिये।

शिष्यता

आरंम्भ से ही हमारे विवाह दूसरे मसीहियों से मार्गदर्शन पाने में खुले होने चाहिये।

नी.वचन १३:२० जो बुद्धीमानों की संगती में रहता है वह भी बुद्धीमान बन जाता है। विवाह का अर्थ है दो पापियों का एकसाथ रहना। वहाँ लड़ाई भी होंगे। इसिलिये हमें बुद्धिमान लोगों की मदद की आवश्यक्ता है।

नी.वचन १४:१ बुद्धिमान स्त्री अपने घर को बनाती है, पर मूढ़ स्त्री उसको अपने ही हाथों से ढा देती है। हम शायद अपने ही हाथों से एक दूसरे को चीर फाड़ दें।

नी.वचन १३:१० झगड़े–रगड़े केवल अहंकार ही से होते हैं, परन्तु जो लोग सम्मति मानते हैं, उनके पास बद्धि रहती है।

प्रणय

१कुरी.७:५ शारीरिक रुप से एक दूसरे को वंचित न रखो।

श्रेष्ठगीत: उन विशेष स्पर्शों को याद रखो जो प्रणय(रोमांस) को जीवित रखते हैं। (कार्ड, फूल, तोहफे.....)।